बाल विज्ञान पत्रिका

मार्च 2008 • 15 रुपए

चकमक

परीक्षा की घड़ी

रंग में भंग

रैट स्नेक चूहे खाता है इसलिए उसे रैट स्नेक कहा जाता है। जापान के एक अजायबघर में कुछ अलग ही देखने को मिला। वहाँ दो साल के एक सवा मीटर लम्बे रैट स्नेक और 9 सेंटीमीटर लम्बे एक हैम्सटर (चूहे जैसे जीव) के बीच दोस्ती हो गई है। बात तब शुरू हुई जब अजायबघर के रखवाले ने साँप के पिंजरे में एक हैम्सटर छोड़ा। इस ताज़े भोजन को खाने की जगह रैट स्नेक ने उसकी ओर दोस्ती का हाथ (या मुँह?) बढ़ाया।

अब दोनों एक ही पिंजरे में रहते हैं। हैम्सटर साँप के ऊपर ही सो जाता है। दोनों मज़े से रह रहे हैं।

इंटरनेट अवॉर्ड 2007 के विजेता दो फोटो

दो आँखें, कितने हाथ?

अजब गोदना, गज़ब गोदना

बंसी लाल परमार के कला-चित्र

मौरिस ग्रीन ने सन्यास लिया

मौरिस ने 1999 के एथेंस ऑलम्पिक में सौ मीटर दौड़ सिर्फ 9.79 सेकेण्ड में पूरी की थी। 2002 में इस रिकॉर्ड को टिम मोंटगोमरी ने तोड़ा।

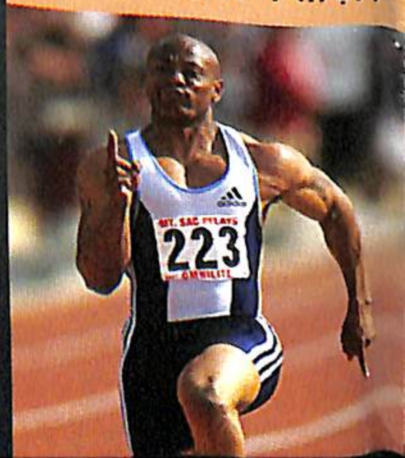

मेरे प्यारे दोस्तो,

अब तुम लोग अपने स्कूली वर्ष की समाप्ति और वार्षिक परीक्षा के इन्तज़ार में होगे। जनवरी-फरवरी के आसपास पढ़ाई का माहौल बढ़ने लगता है। जिन बच्चों ने साल भर पढ़ाई को नज़रअन्दाज़ किया उन्हें अब पाठ्यपुस्तकें याद आने लगती हैं। और रटने-समझने की चीज़ों का पहाड़ कितना ऊँचा है इसका अहसास होने लगता है।

जब मैं मिडिल स्कूल में था तो दो घटनाओं से मेरी पढ़ाई के तरीके में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। पहली घटना यह थी – एक बार महान गायक पंडित नारायण राव व्यास जी एक संगीत गोष्ठी में हिस्सा लेने बनारस आए। व्यास जी पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के शिष्य एवं उनकी गायकी के जाने-माने कलाकार थे। वे उम्र में मेरे पिताजी से कई साल बड़े थे। बनारस आने पर व्यास जी हमारे घर ठहरा करते थे। उनके चुटकुले, यात्राओं के अनुभव, बड़ों की कहानियाँ मैं और मेरा छोटा भाई अनन्त चाव से सुना करते थे। इसलिए हम दोनों व्यास जी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन इस दफे व्यास जी ने कुछ नया ही सुर छेड़ा। पहले उन्होंने मुझे और अनन्त को बुलाकर एक छोटा-सा लेक्चर दिया। स्वावलम्बन के महत्व पर! हमें अपने काम खुद करने की आदत बनानी चाहिए। जहाँ तक हो सके दूसरों की सहायता टालनी चाहिए।

व्यास जी की इस लेक्चरबाज़ी की वजह यह थी कि वास्तव में हम दोनों काफी परावलम्बी थे। घर में नौकर-चाकर भी थे जो बिस्तर बछाना, नहाने के लिए पानी गरम करना आदि करते थे। इतना ही नहीं पढ़ाई भी हम नियमित रूप से नहीं करते थे। चूँकि कक्षा में हम अव्वल रहा करते थे, इसलिए पिताजी भी पढ़ाई के बारे में हम पर दबाव नहीं डालते थे। व्यास जी ने उन्हें समझाया – इन बच्चों को स्वावलम्बन की दीक्षा दो और इनमें रोज़ चार घण्टे पढ़ाई की आदत डालो।

बस, हम दोनों पर अच्छी खासी नौबत आई। सुबह पाँच बजे उठकर पढ़ाई शुरू करने का आदेश आया और अपने काम खुद करने का फरमान जारी हुआ। हमें लगा कि हमारे प्रिय मेहमान ने हमारे साथ कैसा विश्वासघात किया। सुबह की मीठी नींद छोड़कर कलम-दवात उठाने को जी नहीं करता था। बिस्तर स्वयं उठाने का कष्ट अनावश्यक लगता।

मैं जब परदेस में छात्र था तब मुझे इनकी उपयुक्तता का अहसास हुआ। वहाँ सब काम खुद ही करने होते थे। और अध्यापक ऐसी तेज़ रफ़्तार से पढ़ाते थे कि रोज़ नियमित पढ़ाई के बगैर काम ही नहीं चलता था।

पढ़ाई की दूसरी दीक्षा मिली मोरू मामा से। मोरू मामा एम.एस.सी. गणित के छात्र के रूप में हमारे घर रहते थे। तब मैं आठवीं में था। पिताजी ने हमारे घर की दीवारों पर दो ब्लैक बोर्ड बनवाए थे। उन पर अनन्त और मैं चित्र बनाया करते थे, या नक्शे। कभी-कभी पढ़ाई के लेख भी लिखते थे पर उनका प्रमुख उपयोग मनोरंजन के लिए होता था।

लेकिन एक दिन सबेरे उठकर बोर्ड के पास गया तो उस पर मामाजी ने लिखा था – A Challenge Problem for JVN यानी जयन्त वी नार्लिकर के लिए एक चुनौती। प्रश्न गणित का था। एक कूट प्रश्न, जैसा पाठ्यपुस्तक में नहीं मिलता है। मैंने चुनौती का जवाब तो दिया लेकिन काफी मेहनत के बाद। "अब मैं बीच-बीच में ऐसे प्रश्न लिखकर तुम्हें चुनौती देता रहूँगा" मामा साहब ने ऐलान किया। "अगर प्रश्न सुलझा सके तो तुम्हारी जीत! अगर प्रश्न न सुलझे तो हार मानोगे और मैं सुलझा दूँगा।"

अगले 2-3 वर्षों में मोरू मामा ने चुनौती से भरे प्रश्नों के माध्यम से मुझे गणित के जो दर्शन कराए वे कक्षा में या पाठ्यपुस्तकों में कभी नहीं मिलते। नए अनसुलझे प्रश्न वैज्ञानिकों को उसका हल ढूँढने के लिए प्रेरित करते हैं। आगे चलकर पता चला कि मूलभूत वैज्ञानिक शोधकार्य प्रकृति की चुनौतियों के जवाब होते हैं। ऐसे शोधकार्य के लिए मोरू मामा के प्रश्न मेरे लिए एक अच्छी ट्रेनिंग साबित हुए।

तो मेरे मित्रो, चुनौतियों का जबाव देना सीखो और वह भी अपने बूते पर!

शुभकामनाओं सहित

जयन्त नार्लीकर

जयन्त विष्णु नार्लिकर का जन्म जुलाई 1938 में कोल्हापुर, महाराष्ट्र में हुआ था। खगोलभौतिकी और खगोलशास्त्र में उनके योगदान के लिए उन्हें 1965 में पदमभूषण और 2004 में पदमविभूषण दिया गया। वे लोकप्रिय विज्ञान लेखन में भी गहरी रुचि रखते हैं।

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका • 258 • मार्च 2008

दोस्तो,
इन दिनों तुम परीक्षा में लगे होगे। कभी सुबह-शाम ज़रा बाहर निकल कर देखो। पेड़-पौधे रंगों से कैसे तरबतर हुए जा रहे हैं। कई पेड़ तो इतने फूले हैं कि उनकी डालियाँ तक नज़र नहीं आती हैं। जैसे कई पेड़ों के फूल गलती से एक ही पेड़ में आ गए हैं। हाँ, अगला अंक चाँद पर केन्द्रित होगा।

सुशील शुक्ल

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सम्पादकीय सलाहकार
रैक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
अतनु राय
डिजिटल एक्सप्रेशन्स

वितरण
अनिल लोखण्डे
कमल सिंह

सहयोग
कविता तिवारी
कार्तिक शर्मा
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रति - 15.00
वार्षिक - 150.00
दो साल - 275.00
तीन साल - 400.00
आजीवन - 1500.00

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 46 2016
फोन: (0755) 267 1017, 255 0976, 6549033
फैक्स: (0755) 246 1703
chakmak@eklavya.in
www.eklavya.in

इस अंक में...

3 मीठी चीनी
4 गूपी गाइन बाघा बाइन
7 "त" से शुरू होने वाली चीज़ें
8 वे सिर्फ एक पर्वतारोही नहीं थे
9 डार्विन, चन्द परिन्दे और...
12 शो खत्म
14 हाथ की सफाई उर्फ...
16 जब अकबर बादशाह की मौत हुई
19 कविताएँ
20 तुम भी बनाओ - कौआ
22 डाक्टर चींचूं के चमत्कार
24 नाटक - जयगान
29 चित्र पहेली
30 बसन्त के मेले में पांगर, ततैया और छोटा बसन्ता
32 मेरा पन्ना
35 माथापच्ची/उलझन
36 हरे घास की छप्पर वाली झोपड़ी
40 मेरी डायरी के कुछ पन्ने

आवरण डिज़ाइन: अतनु राय, फोटो: *चाइल्डहुड इन इंडिया*, युनिसेफ से साभार

14

9

8

24

30
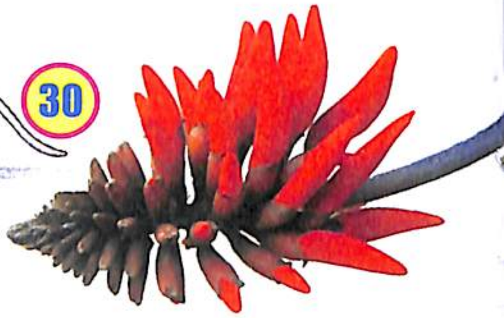

32

4

20

22

40
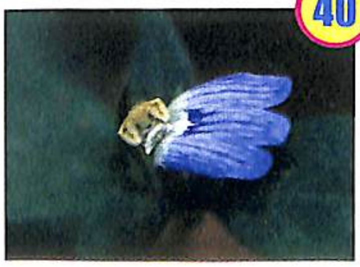

चित्रः शोभा घारे

मीठी चीनी...

दो दोस्त थे। उनमें से एक बेहतरीन संगीतज्ञ था। वह तारों वाला तुम्बा बजाता था। दूसरा दोस्त संगीत सुनने का शौकीन था। जब संगीतज्ञ पहाड़ों की कल्पना में डूबा तुम्बे के तार छेड़ता, सुनने वाला मित्र कह उठता, "ये पर्वत कितने भव्य और सुन्दर हैं।"

जब संगीतज्ञ नदी की धुन तुम्बे पर छेड़ता, सुनने का शौकीन दोस्त कहता, "लहरों की कल-कल मुझे भिगो रही है।"

एक दिन सुनने के शौकीन दोस्त की मौत हो गई। उस दिन संगीतज्ञ ने अपने साज़ के तार काट दिए और फिर कभी संगीत नहीं बजाया।

आज भी चीनी भाषा में साज के तार काटना मुहावरे का अर्थ है – गहरी और अंतरंग मित्रता होना।

सुनील मिश्र

गूपी गाइन बाघा बाइन

बच्चों के लिए अच्छा सिनेमा उपलब्ध हो सके इसलिए कभी पूर्व प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपने समय के श्रेष्ठ फिल्मकारों से आग्रह किया था कि बच्चों के लिए वे कम से कम एक फिल्म अवश्य बनाएँ। उनको लगता था कि बड़े निर्माता, निर्देशक और अभिनेताओं को अपनी आय का एक छोटा-सा हिस्सा बच्चों के लिए एक अच्छी और प्रेरक फिल्म बनाने में लगाना चाहिए। इस क्रम में *दो आँखे बारह हाथ*, *बूट पॉलिश* और *जागृति* जैसी अविस्मरणीय और यादगार फिल्में बनीं। इसी तरह की अपील नफीसा अली ने भी की थी जब वे दो साल पहले बाल चित्र समिति की अध्यक्ष बनीं थीं। उस अपील का आज के सिनेमा पर कितना असर हुआ, पता नहीं! आमिर खान ने *तारे ज़मीं पर* बनाकर एक पहल की है। इस फिल्म के लिए उनको शुक्रिया।

बच्चों के लिए हिन्दी में अच्छे सिनेमा का अकाल-सा है। एनीमेशन फिल्में बन रही हैं। लेकिन कोरा रोमांच न जाने कितना असरदार है, कारगर है? वैसे समय-समय पर अलग-अलग भाषाओं में बच्चों के लिए बेहतरीन सिनेमा बना है। भाषाई सिनेमा में हमारे सामने बहुत-से फिल्मकार और बहुत-सी फिल्में हैं। उन्हीं में से एक फिल्म *गूपी गाइन बाघा बाइन* की चर्चा हम यहाँ कर रहे हैं।

गूपी गाइन बाघा बाइन सत्यजीत राय ने अपने बेटे संदीप की इच्छा, आग्रह और ज़िद पर बनाई थी जब वे बहुत छोटे थे। सत्यजीत राय बांग्ला सिनेमा के महान फिल्मकार हैं। उन्होंने श्रेष्ठ तथा कालजयी फिल्में बनाईं। सत्यजीत राय को भारत रत्न और आस्कर से सम्मानित किया गया है।

कहानी गूपी और बाघा की...

गूपी गाइन बाघा बाइन का निर्माण 1968 में हुआ। यह फिल्म दो बेसुरे और मानसिक रूप से चुनौती झेल रहे साफ दिल कलाकारों की दिलचस्प कथा है। इनमें से एक किसान का बेटा गूपी है जो गाता है और बाघा बजाता है। गूपी का सपना एक बड़ा गायक बनने का है मगर उसकी आवाज़ से कस्बे और शहर को बड़ी बाधा पहुँचती है। खासकर राजा को गूपी के गाने से बड़ी चिढ़ है। इसी प्रकार बाघा ढोल बजाने वाला है जिसके ढोल बजाने से पूरा वातावरण आतंकित हो उठता है। लेकिन उसका भी सपना एक बड़ा वादक बनने का है इसलिए किसी की परवाह किए बगैर वो अपना काम करता है। नतीजा यह होता है कि दोनों को ही उनके राज्यों से देश निकाला दे दिया जाता है। गूपी बेचारा गधे पर बैठकर जंगल में भटकने लगता है जहाँ पर उसे बाघा मिलता है। संयोग से दोनों भटकते-भटकते एक ही जगह पर थककर चूर होकर बैठ जाते हैं।

यहीं पर दोनों की दोस्ती होती है। आपस में वे अपनी-अपनी रुचियों के बारे में बातें करते हैं। दोनों को रात में

डर लगने लगता है। डर से ध्यान हटाने के लिए वे जंगल में पेड़ के नीचे बैठकर अपना संगीत शुरू करते हैं। गूपी गाने लगता है और बाघा बजाने लगता है। कमाल की बात यह है कि जिस संगीत की वजह से उनको देश निकाला मिलता है वही संगीत भूतों और उनके सरदार को खूब भाता है। वे रात में जंगल में नाच रहे होते हैं। भूत दोनों को तीन वरदान दे जाते हैं। एक वरदान है, मनचाहे कपड़े और खाना प्राप्त होना, दूसरा वरदान है, ऐसी संगीत दक्षता हासिल कर लेना कि सुनने वाला सम्मोहित हो जाए और तीसरा वरदान है, जादुई चप्पलें मिलना जिनसे जहाँ चाहें वहाँ पहुँचा जा सके।

गूपी और बाघा का जीवन बदल जाता है। वे पड़ोस के राज्य में पहुँचते हैं और राजा को प्रभावित करते हैं। राजा शत्रु राजा को जीतना चाहता है। गूपी और बाघा परस्पर शत्रु राजाओं का हृदय परिवर्तन करने में कामयाब होते हैं। दोनों राजाओं में दोस्ती हो जाती है।

गूपी-बाघा के बहाने

गूपी गाइन बाघा बाइन, एक खूबसूरत-सी फिल्म है जिसे देखना बहुत अच्छा लगता है। हमारे सामने मन को सच्ची और सकारात्मक लगने वाली कथा होती है जिसे देखते हुए शत्रु, शत्रु नहीं लगते, भूत डराते नहीं और बुरे माने जाने वाले आदमी सज्जन नज़र आते हैं। सत्यजीत राय ने इस फिल्म को बड़ी खूबसूरती से बनाया है। हम चूँकि ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ हमारे आसपास गहरे मनमुटाव, शत्रुताएँ, दुर्घटनाएँ, तनाव, मुश्किलें हैं, इसलिए हमें यह फिल्म प्रभावित करती है। इस फिल्म को देखते हुए डर नहीं लगता, हम आतंकित नहीं होते बल्कि कई बार हमें इस फिल्म का हिस्सा होने का अहसास होता है। इस खूबी के साथ यह फिल्म बनी है। इस फिल्म का अँग्रेज़ी संस्करण *द एडवेंचर्स ऑफ गूपी एण्ड बाघा* के नाम से बना था। इसे विश्व के अनेक देशों में सराहा गया। इस फिल्म का संगीत भी सत्यजीत राय ने ही तैयार किया है। जिसमें विशेष रूप से घटम, मृदंगम, घुँघरुओं के गुच्छों का अच्छा प्रयोग किया गया है।

गूपी गाइन बाघा बाइन को श्रेष्ठ निर्देशन, राष्ट्रपति का स्वर्ण व रजत पदक सहित दुनिया के कई देशों में अनेक पुरस्कार मिले थे।

चित्र - जितेन्द्र ठाकुर

बाघ मामा के साथ के अनुभव - सत्यजीत राय

फिल्मों में जानवरों से मनचाहा काम लेना बहुत मुश्किल होता है। *पाथेर पाँचाली* में आपने भोलू (कुत्ते) का काम देखा ही होगा। पर अगर अभिनेता बाघ हो तो???

इस सिलसिले में *गूपी गाइन बाघा बाइन* के मज़ेदार किस्से हैं। गूपी और बाघा रात में डरे-डरे से घूम रहे होते हैं। अचानक सामने से बाघ आता दिखाई देता है। वे डर के वहीं जम जाते हैं। लेकिन बाघ को कोई फर्क नहीं पड़ता। वो राजसी चाल से आता है और घूमता हुआ चला जाता है।

यह तो सीन था! लेकिन इसे शूट कैसे किया जाए? बाघ कहाँ से लाया जाए? सरकस से! हाँ, यही सूझा। उन दिनों कलकत्ते में भारत सरकस चल रही थी। हमने उनके मैनेजर को फोन लगाया और सीधे जा पहुँचे उनके कमरे (सॉरी टैंट) में। उन्होंने धीरज से हमारी बात सुनी और रिंग मास्टर श्रीमान थोराट से मिलने को कहा। सब कुछ तय हो गया। एक घण्टा शूटिंग का और दो दिन आने-जाने का। लेकिन दिमाग में एक कीड़ा कुलबुला रहा था। जंगल में बाघ को खुला छोड़ना ठीक होगा? थोराट जी भी इसे लेकर आश्वस्त नहीं थे। तो क्या सारी प्लानिंग चौपट?

नहीं, थोराट जी के पास इससे निपटने का एक आइडिया था। "मैं रहूँगा न साथ-साथ।" लेकिन दिक्कत यह थी कि अगर ये महाशय बाघ के साथ-साथ बने रहेंगे तो गूपी-बाघा डरेंगे कैसे? नहीं..नहीं यह नहीं चलेगा।

फिर तय हुआ कि बाघ के गले में एक पतली मगर मज़बूत तार बाँध दी जाएगी। आइडिया बढ़िया था। तार कैमरे में दिखेगी भी नहीं।

हम तय दिन तय जगह पर पहुँचे। इस अद्‌भुत नज़ारे को देखने हमारी यूनिट के कोई 25 लोग और आसपास के कई लोग जमा हो गए। श्रीमान थोराट एक बड़े से ढँके हुए पिंजरे के साथ मौजूद थे। कवर उठाया तो मैं हैरान रह गया। वहाँ एक नहीं दो-दो बाघ थे। "मुझे लगा अगर एक से काम न बने तो दूसरा काम आ जाएगा," थोराट जी गर्व से बोले। मुझे यह तनिक न भाया। जी चाहा पूछूँ कि अगर दूसरे से भी काम न बने तो?

खैर हमने कैमरा जमाया। इस तरह कि बाँस का झुरमुट बिलकुल सामने हो। लोगों से कैमरे से दूर रहने की गुज़ारिश की। हमें और गूपी-बाघा को तो बाँस के झुरमुट और कैमरे के पास होना ही था ताकि कम से कम एक सीन में तो ये लोग बाघ के साथ हों ही। सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। लोहे का खूँटा गड़ चुका था जिससे तार को बाँधा जाना था।

पिंजरे का गेट खोला गया। बाघ को आवाज़ लगाई गई। बाघ ने भी क्या तो फुर्ती से छलाँग लगाई। लेकिन यह क्या! बजाय इसके कि वह ठाठ से, राजसी चाल चलता हुआ आता वो तो खिलंदड़ों की माफिक कूदने-फाँदने-लोटने लगा। और उसके साथ घिसट रहा था तार पकड़े उसका प्रशिक्षक। कैमरा मुँह बाए बाँस को ताक रहा था जहाँ राजा जी आने का नाम नहीं ले रहे थे। आखिरकार जब वे शान्त हुए जब जाकर कुछ शॉट लिए जा सके। थोराट जी ने बताया कि इस बाघ का जन्म सरकस में ही हुआ है। इसे कभी पिंजरे के बाहर तक नहीं छोड़ा गया है। इसीलिए शायद जंगल में अपने प्राकृतवास को देख बौरा रहा है।

शूटिंग खत्म होने के बाद बाघ को वापस लॉरी में रखे पिंजरे में जाना था। प्रशिक्षक ने कहा, "ऊपर"। इस पर उसे स्टूल पर कूदकर अन्दर जाना था। पर श्रीमान थोराट के बार-बार "ऊपर" कहने पर भी बाघ बाँस के पास बैठा मज़े से उसे के पत्ते खाता रहा।

जहाँ प्रशिक्षक उसके इस अप्रत्याशित व्यवहार से परेशान था, हम बड़े निश्चिन्त हुए। जो बाघ बाँस की पत्तियाँ खाने में मज़े ले सकता है वो हमें क्या खाएगा? मौके का फायदा उठाकर मैंने कैमरा उठाया और बाघ के इस गैर-बाघीय व्यवहार को कैमरे में कैद करने लगा। ज़ाहिर है मैं उसके काफी पास था। सब ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक राजा जी उठे और कोई 6 फुट लम्बा डग भरकर पिंजरे में जा बैठे। और काफिला चल दिया।

यह न समझना कहानी यहीं खत्म हुई। कलकत्ता पहुँचकर जो बाघ वाले सीन देखे तो धक से रह गए। कैमरे ने ठीक से काम नहीं किया था सो सब कुछ काला-काला सा दिख रहा था। तो क्या सीन छोड़ा जाए?? नहीं भाई। फिर भारत सरकस, फिर लॉरी, फिर बाघ, फिर शूटिंग। लेकिन इस बार जगह बदली थी। गाँव था वही *पाथेर पाँचाली* वाला।

प्रस्तुतिः सत्यजीत राय की किताब *चाइल्डहुड डेज़ - अ मेमॉयर* से

इस पन्ने में "त" से शुरू होने वाली कितनी चीज़ें हैं?

मैंने ढूँढीं...

"त" से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीज़ें हमसे छूट गईं? उनके चित्र बनाओ।

वे सिर्फ एक पर्वतारोही नहीं थे...

मोहित शर्मा

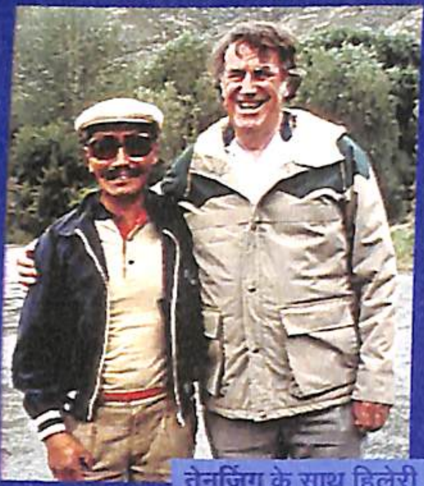

तेनजिंग के साथ हिलेरी

हिम्मत भरे कारनामे कोई भी कर सकता है। कोई आम-सी खूबियों वाला आदमी भी। कुछ ऐसा ही मानना था न्यूज़ीलैंड के उस मधुमक्खी पालक इंसान का जो खुद को "एड" कहलाना पसन्द करता था। जिसे दुनिया आज सर एडमण्ड हिलेरी के नाम से जानती है। जो पृथ्वी की सबसे ऊँची जगह माउण्ट एवरेस्ट पर अपने साथी तेनजिंग नॉरगे के साथ सबसे पहले पहुँचा।

हिलेरी खोजी तबियत के इंसान थे। इसीलिए उनकी नज़रों ने माउण्ट एवरेस्ट के साथ-साथ उसके आस-पास रहने वालों की गरीबी, बीमारी और अशिक्षा को भी ढूँढ़ लिया। नेपाली शेरपा तंगहाली में थे। न तो उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध थीं, न ही शिक्षा के अवसर। हिलेरी ताउम्र इन समस्याओं से उबरने में नेपाली शेरपाओं की मदद करते रहे।

सर हिलेरी से पहले पहाड़ों पर चढ़ना अमीरों का शगल माना जाता था जिसमें मदद करने वाले शेरपाओं की हैसियत एक अदने नौकर से ज़्यादा नहीं समझी जाती थी। एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखने वाले हिलेरी न सिर्फ खुद एवरेस्ट की चोटी पर चढ़े बल्कि उनके साथ तेनजिंग नाम का शेरपा भी था जिसे उन्होंने उस अभियान में बराबरी का दर्ज़ा दिया और दिलाया भी।

पर्वतारोहियों के दल का कोई सदस्य जब खराब मौसम या किसी अन्य दुर्घटना में घायल हो जाता तो उसे छोड़कर शेष दल आगे बढ़ जाता था। हिलेरी ने इस प्रवृत्ति की खिलाफत की। उन्होंने कहा कि एवरेस्ट पर चढ़ते वक्त किसी भी मोड़ पर अगर उन्हें कोई मुसीबत में फँसा इन्सान मिला होता तो वे उसकी जान बचाने के लिए अपना अभियान स्थगित कर देते। हिलेरी की इस बात से कई पर्वतारोही बहुत प्रभावित हुए जिसके चलते पहाड़ों पर चढ़ने वाले कई लोगों की जानें बचाई जा सकी।

अब जबकि हिलेरी हमारे बीच नहीं हैं तब यह फैसला करना बहुत मुश्किल नहीं है कि हम किस तरह उन्हें याद करें – एक महान पर्वतारोही के तौर पर जिसने दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर अपना परचम फहराया या फिर एक साधारण और संवेदना से भरे एक इंसान के रूप में जिसने अपनी सादगी, निश्छलता और सेवाभावना से आम आदमी का दिल जीत लिया।

एडमण्ड हिलेरी व तेनजिंग नॉरगे के एवरेस्ट पर चढ़ने से लेकर अब तक हिमालय का नज़ारा काफी बदल चुका है। अब हिमालय उतना सफेद नहीं रहा है। वहाँ जगह-जगह पर्वतारोहियों द्वारा इस्तेमाल की गई चीज़ें बिखरी पड़ी दिखाई देती हैं। इस सामान में ऑक्सीजन के सिलण्डर, खाने के डिब्बे, खाली बोतलें और रस्सियाँ आदि शामिल हैं। यहाँ के ग्लेशियरों से एशिया की कई बड़ी नदियाँ निकलती हैं इसलिए भी कचरे का बढ़ना खतरनाक साबित हो सकता है। एडमण्ड हिलेरी जैसे लोगों की सोच जहाँ खोज परक थी वहीं अब ज़्यादातर पर्वतारोहियों की सोच उपलब्धिपरक है। कभी हिमालय पर्वतारोहियों को मुश्किल में डाला करता था आज पर्वतारोहियों की वजह से हिमालय मुश्किल में है।

डार्विन, चन्द परिंदे और जीवन का विकास

सुशील जोशी

चार्ल्स डार्विन का नाम तो तुमने ज़रूर सुना होगा। न सुना हो, तो कोई बात नहीं। चार्ल्स डार्विन जीव विज्ञान में वही स्थान रखते हैं जो भौतिकी में आइज़ैक न्यूटन का है। जीव विज्ञान में डार्विन का प्रमुख योगदान यह है कि उन्होंने बताया था कि जीवन का विकास कैसे होता है। पहले माना जाता था कि इतने तरह-तरह के जीव एक साथ इस धरती पर प्रकट हुए थे। और यह किसी ईश्वर का चमत्कार था। मगर धीरे-धीरे कई प्रमाण इकट्ठे होते गए जिनके कारण यह मानना पड़ा कि पृथ्वी पर जीवों का धीरे-धीरे विकास हुआ है। शुरू-शुरू में बहुत सरल जीव थे और धीरे-धीरे विकास हुआ और तरह-तरह के जीव "बनते" गए। मगर एक कारण से इस बात को पचाना आसान नहीं था (हाजमोला के साथ भी नहीं)। यहीं डारविन ने वह काम किया कि अचानक सारी बातें एक सूत्र में बँध गईं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जीवों में विकास कैसे होता है।

टापुओं पर डार्विन के प्रयोग

डार्विन को अपने विचार बनाने में कुछ टापुओं पर किए गए अध्ययनों से बहुत मदद मिली थी। *(इस यात्रा के बारे में कुछ संस्मरण अगले पेज पर पढ़ सकते हैं।)* टापुओं का यह समूह दक्षिण अमरीका के इक्वेडोर नामक देश के पास स्थित है और इसे गेलापेगोस द्वीप समूह कहते हैं। यह बहुत सारे छोटे-छोटे टापुओं से मिलकर बना है, कई तो किसी एक गाँव से भी छोटे हैं। ये सभी द्वीप ज्वालामुखी के लावे से बने हैं। डार्विन यहाँ एक अन्वेषी दल के साथ प्रकृति वैज्ञानिक के रूप में गए थे। यही वह जगह थी जिसने डार्विन की आँखें खोल दीं और ऐसी खोलीं कि डार्विन सबकी आँखें खोलने में लग गए।

इन टापुओं पर फिंच नामक पक्षी रहते हैं। इन्हें हिंदी में शायद कुछ नहीं कहते क्योंकि इस तरफ ये पाए नहीं जाते। वैसे ये गीत गाने में निपुण होते हैं। इन्हें चटक कह सकते हैं। डार्विन ने देखा कि वैसे तो सारे चटक एक जैसे हैं मगर अलग-अलग टापुओं पर रहने वाले चटक एक-दूसरे से थोड़े अलग भी हैं। किसी एक ही टापू के चटक भी थोड़े अलग-अलग थे। ये सारे इक्वेडोर से उड़कर वहाँ पहुँचे थे। लेकिन अब लगभग एक ही टापू पर रहते थे। डार्विन ने पाया कि इन चटकों की चोंच में काफी अन्तर हैं। सो उन्होंने इनकी चोंचें नापना शुरू कर दीं। वे चकित रह गए। चटकों की चोंच में खूब विविधता थी। और यह विविधता अलग-अलग प्रजाति की चटक में ही नहीं बल्कि एक ही प्रजाति की चटकों में भी दिखी।

डार्विन ने इस तरह के कई अध्ययन किए और इस नतीजे पर पहुँचे कि जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों में विविधता पाई जाती है। इस विविधता के कारण उनकी जीने की क्षमता में थोड़े-बहुत अन्तर होते हैं। जब अन्तर होते हैं तो कोई कम जीता है, कोई ज़्यादा। किसी की कम सन्तानें होती हैं, किसी की ज़्यादा। डार्विन ने कहा कि जीवों के विकास का प्रमुख कारण यह विविधता ही है। डार्विन ने अपना यह सिद्धान्त एक किताब के रूप में 1859 में प्रकाशित किया था: *ऑन ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़ बाय मीन्स ऑफ नेचुरल*

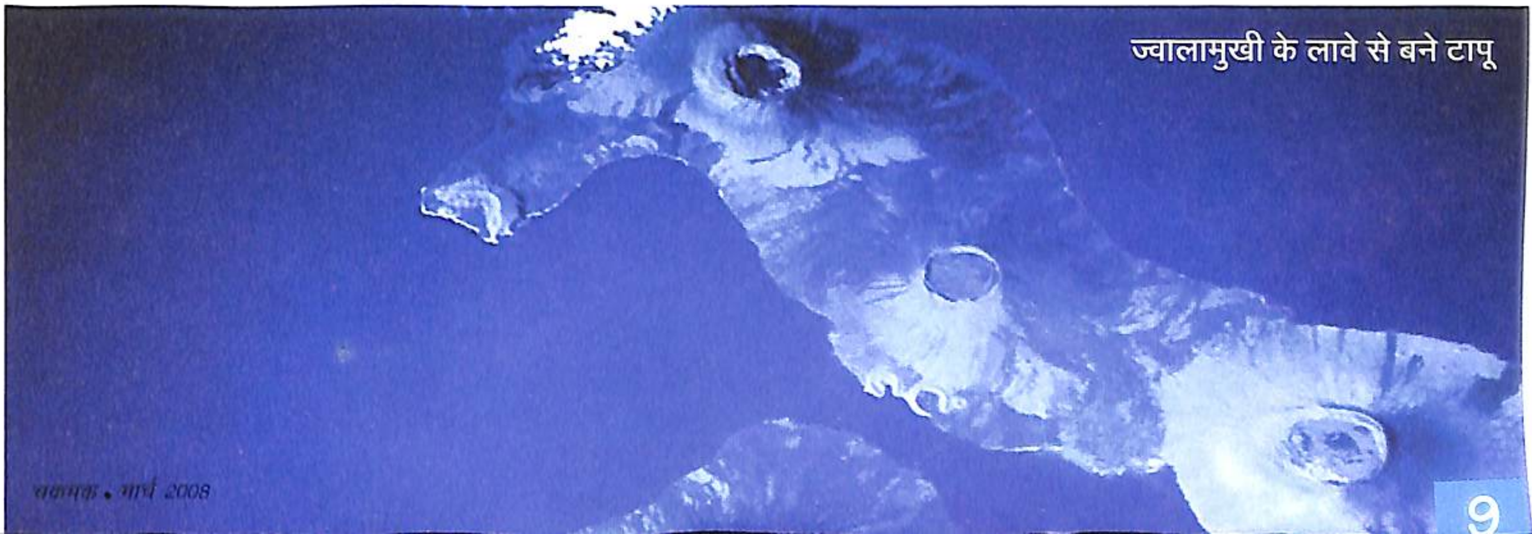

ज्वालामुखी के लावे से बने टापू

सिलेक्शन। संक्षेप में इसे *ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़* कहते हैं।

डार्विन ने जो अध्ययन किए थे उन्हें आगे बढ़ाने के लिए आज भी गेलापेगोस के एक टापू पर कुछ वैज्ञानिक रहते हैं। वे आज भी चटक व अन्य प्राणियों, खासकर उनमें पाई जाने वाली विविधता के अध्ययन में लगे हैं।

सवाल यह है कि क्या विविधता के अध्ययन के लिए गेलापेगोस ही जाना पड़ेगा? यह सही है कि गेलापेगोस की बात थोड़ी खास है क्योंकि इतनी पास-पास इतने छोटे-छोटे टापू हर जगह नहीं होते। टापुओं के बीच समुद्र होने के कारण इन पक्षियों का आपस में मेलजोल बहुत कम होता है। मगर डार्विन का सिद्धान्त सिर्फ गेलापेगोस के लिए नहीं है, वह तो हर जगह लागू होता है।

अब बारी है तुम्हारे प्रयोगों की...

तुम अपने आसपास के जीवों को देखोगे तो विविधता नज़र आएगी। हाँ, पक्षियों को पकड़-पकड़कर उनकी चोंच नापना तो शायद तुम्हारे लिए सम्भव न हो मगर विविधता सिर्फ चटक या सिर्फ पक्षियों में नहीं होती। किसी पेड़ की पत्तियों को ही देखो। चुनौती यह है कि कोई दो हूबहू एक-सी पत्तियाँ ढूँढकर बताओ।

या यह भी कर सकते हो कि दो भाइयों या बहनों को देखो और पता लगाओ कि भाई-भाई या बहन-बहन होने के बावजूद उनमें कितनी विविधता है। यदि जुड़वाँ भाई या जुड़वाँ बहनें मिल जाएँ तो और भी अच्छा। (वैसे एक बात बताऊँ – कुत्ते-बिल्ली तो लगभग हर बार दो-तीन बच्चे देते हैं, जो जुड़वाँ ही हैं। ऐसे "जुड़वाँ" पर भी डार्विन का सिद्धान्त लागू करके देख सकते हो।)

और भी बारीक अध्ययन करने में रुचि हो, तो घास के आठ-दस पौधे ले लो। इनकी आपस में तुलना करके देखो। जैसे तुम देख सकते हो कि प्रत्येक पर कितनी पत्तियाँ हैं, सबसे निचली दो पत्तियों के बीच की दूरी कितनी है वगैरह।

ज़्यादा दूर जाने की बजाय खुद अपने साथियों का अध्ययन भी कर सकते हो। जैसे यह देखने में बहुत मज़ा आएगा कि तुम्हारे साथियों के अँगूठे की छाप में कैसी विविधता है। या अपने हमउम्र साथियों की एक उँगली (जैसे तर्जनी उँगली) की लम्बाई, आधार पर मोटाई और दूसरी व तीसरी कटान के बीच की दूरी की तुलना करके देखो।

यदि कुछ रोचक जानकारी मिले तो मुझे भी खबर करना, तब विविधता और इसके परिणामों के बारे में और बातें करेंगे। चकमक

29 अगस्त, 1831 की बात है...

ब्रिटिश सरकार दक्षिण अमरीकी तट और प्रशान्त महासागर के तटों का सर्वेक्षण कराना चाहती थी। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो प्रकृति वैज्ञानिक की हैसियत से काम कर सके। जिसकी इन प्रदेशों की खूबियाँ जानने में दिलचस्पी हो! केम्ब्रिज के एक वैज्ञानिक पीकॉक ने चार्ल्स डार्विन का नाम सुझाया। डार्विन को मालूम था कि उनके पिता आसानी से उन्हें जाने नहीं देंगे। बचपन में चार्ल्स पूरे समय कीट-पतंगे, वनस्पतियाँ, कंकड़, पत्थर, सीप, शंख, तरह-तरह के जानवरों के अण्डे, मरे हुए जीव-जन्तु जमा करते या फिर निशाना साधते रहते थे। ये दोनों शौक परिवार वालों को बहुत दुखी करते। उनकी इन आदतों पर पिता अक्सर कहते "कुत्ते-बिल्लियाँ, मरे हुए जीव-जन्तु इकट्ठा करने के अलावा भी तुम्हारे पास कोई और काम है..... अरे अपने परिवार का तो ख्याल करो।"

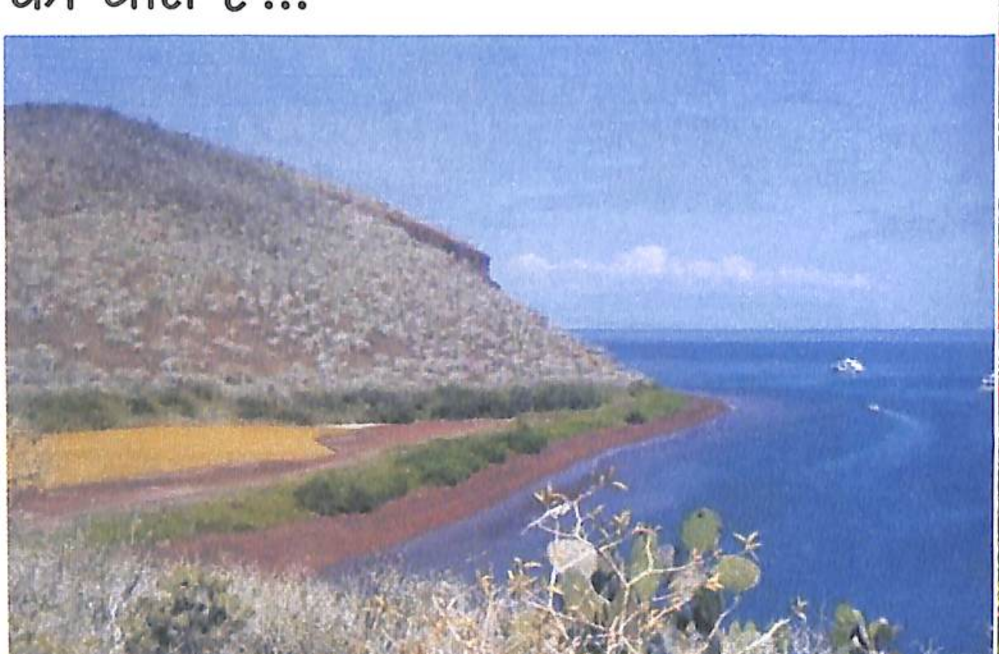

गेलापेगोस द्वीप का एक दृश्य

हुआ भी वही, पिता ने एक शर्त रखी – अगर एक भी समझदार व्यक्ति यह कह दे कि तुम्हें इस यात्रा पर जाना चाहिए तो मैं तुम्हें इजाज़त दे दूँगा। आखिर में किसी तरह पिता राज़ी हो गए। पिता से इजाज़त मिलते ही उन्हें जैसे पंख लग गए थे। उसका सपना पूरा होने वाला था। नई-नई जगहें होंगी, नए-नए जीव होंगे। उन्हें देखना, निहारना, छूना और उनके रहवासों को देखना सब कुछ होगा।

बीगल नामक जहाज़ के दल को उम्मीद थी कि यात्रा दो साल में पूरी हो जाएगी, लेकिन इसमें पूरे पाँच साल लग गए। इस यात्रा ने चार्ल्स को एक बड़ा वैज्ञानिक बना दिया। यात्रा के पहले पड़ाव में उन्होंने उष्ण कटिबन्धीय जंगल देखे। यहीं उन्होंने गुलाम और गुलामी का दुख भी देखा। तरह-तरह के पेड़-पौधे जीव देखकर वे झूम उठते। फुलचुहियाँ फूलों का रस चूसतीं तो कहीं हाउलर बन्दर चीख-चीखकर नाक में दम कर देता।

शायद शार्क से बचने के लिए छिपकलियाँ किनारे की चट्टानों में रहा करती होंगी।

छिपकलियों, तिलचट्टों, कीड़े-मकोड़ों का शिकार करती सैनिक चीटियों को वे घण्टों देखते। और सोचते "हर तरफ संघर्ष है, मरो या मारो, जो ताकतवर है, वही जी रहा है। जो बच सकता है, वही बच रहा है।" उन्होंने प्राचीन आर्माडिल्लों के जीवाश्म देखे। उन्होंने देखा प्राचीन आर्माडिल्लो आज से बड़े ज़रूर थे मगर फिर भी उनमें कितनी ही समानताएँ थीं। उन्हें लगा "शायद जो समय के साथ भौगोलिक ज़रूरतों के हिसाब से अपने को ढाल लेते हैं वही जीवित बचते होंगे और जो नहीं ढल पाते वे नहीं बच पाते हैं।"

इसी यात्रा में उन्होंने एंडिज़ पर्वत श्रृंखला देखी। 36000 मीटर ऊँचे पहाड़ पर उन्हें सीप, शंखियाँ मिलीं। ज़रूर ये पर्वत श्रेणियाँ सागरतल से फटे ज्वालामुखी से बनी होंगी। जब भी मौका मिलता वे तटों पर उतरते और अपने काम में जुट जाते।

उन्होंने चटक (फिंच) की लगभग 22 नस्लें देखीं। सबकी चोंच अलग-अलग थीं। जो चटक कीड़े-मकोड़े खाती थीं उनकी चोंच बीज चुगने वाली चिड़िया से अलग थी। ऐसे ही दलदल में रहने वाली चटक की चोंच इन दोनों से बिल्कुल ही अलग थी।

चटक

गेलापेगोस द्वीप पर उन्होंने चटक के अलावा भी कई विलक्षण चीज़ें भी देखीं। वहाँ की छिपकली, पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े सब खास थे। गेलापेगोस का मतलब होता है "बड़ा भारी कछुआ।" वहाँ ऐसे कछुए झाड़ियों में चहलकदमी करते मिल जाते थे। शायद इसीलिए यह नाम पड़ा होगा।

समुद्री छिपकलियों का कुदरती निवास तो समुद्र ही था। लेकिन चार्ल्स ने देखा कि ये छिपकलियाँ समुद्र में नहीं जाती हैं। उन्होंने एक को समुद्र में भी उछाल दिया। लेकिन यह क्या? छिपकली झटपट तैरकर फिर तट की चट्टानों में घुस गई। चार्ल्स ने सोचा शायद शार्क से बचने के लिए किनारे की चट्टानों को इन्होंने घर बनाने के लिए चुना होगा। ऐसा स्वभाव भी इन्हें विरासत में मिला होगा।

डार्विन अन्त तक काम करते रहे। नए-नए अवलोकन और नए-नए सिद्धान्त। विकासवाद पर काम करते समय उन्होंने कबूतर तक पाले। उनका मानना था कि विश्व की प्रजातियों की रचना एक झटके में किसी ईश्वर की सृष्टि से नहीं हुई है बल्कि इनका विकास पहले से मौजूद प्रजातियों से हुआ है। हर प्राणी विशेष का अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसमें कुछ खासियतें होती हैं।

एक प्रजाति के अन्दर ये खासियतें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलती हैं। अन्त में जब बड़ी संख्या में प्राणी इसमें भाग लेते हैं तब वे सब एक ऐसी प्रजाति के सदस्य बनते हैं, जो पहले की पीढ़ियों से भिन्न होगी। यानी नई प्रजातियों से एक या कई जातियाँ बन सकती हैं और समय के साथ इनका फर्क बढ़ता जाता है। इन सिद्धान्तों के कारण डार्विन को वैज्ञानिक जगत की ही नहीं बल्कि धार्मिक जगत की भी आपत्तियाँ सहनी पड़ीं।

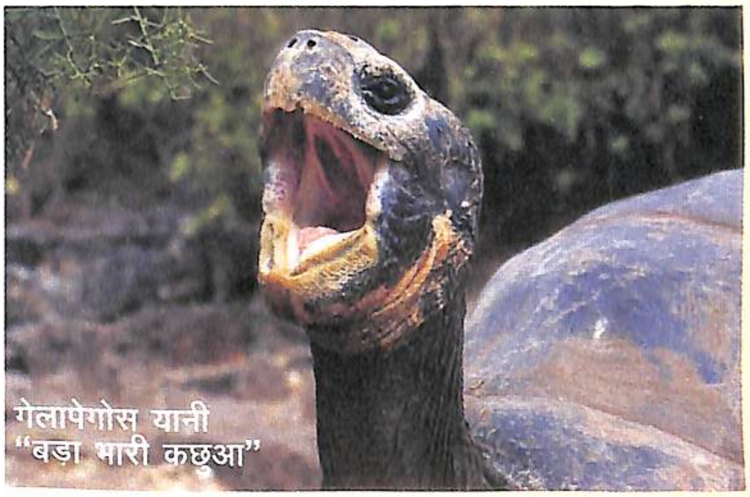
गेलापेगोस यानी "बड़ा भारी कछुआ"

शो खतम!

इन्फान्ते डॉन ज़ुआन मैन्युअल

सान्तियागो शहर में एक डीन रहा करता था। उसे जादू सीखने की बड़ी इच्छा थी। एक दिन उसे तोलेडो के एक जादूगर के बारे में पता चला। इस उस्ताद जादूगर का नाम था – डॉन इलान। इलान की तलाश में डीन तोलेडो जा पहुँचा।

तोलेडो पहुँचते ही वह सीधे इलान के घर गया। इलान अपने घर के पिछवाड़े के एक कमरे में बैठे पढ़ रहे थे। उन्होंने डीन का आदर के साथ स्वागत किया। और अनुरोध किया कि कुछ खा-पी लेने के बाद ही वह अपने आने का मकसद बताए। एक आरामदेह कमरे में ले जाकर डॉन इलान ने कहा कि वह डीन के आने से बेहद खुश है। भोजन के बाद डीन ने अपने आने का कारण बताया। उसने इलान से जादू की कला सिखाने की चिरौरी की। इस पर इलान ने कहा कि वह जानता है कि उसका मेहमान एक डीन है और उसका भविष्य अच्छा है। और अगर वह अपना ज्ञान उसे सिखा दे तो शायद भविष्य में एक ऐसा समय भी आए जब डीन उसे उचित गुरू-दक्षिणा देने से मुकर जाए। जैसा ऊँचे पदों पर बैठे लोग अक्सर करते हैं। डीन ने कसम खाई कि वह इलान के उपकार को कभी नहीं भूलेगा और हमेशा उसका कहा मानेगा।

जब दोनों में समझौता हो गया तो इलान ने खुलासा किया कि जादू एकदम एकान्त में ही सीखा जा सकता है। उसने डीन का हाथ थामा और उसे अगले कमरे में ले गया। कमरे के फर्श पर लोहे का एक विशाल कुण्डा था। पर इसके पहले उसने अपनी सेविका से कहा कि वह रात के खाने में तीतर पकाए, पर जब तक कहा न जाए उन्हें भूने नहीं।

इलान और डीन ने कुण्डा उठाया और घुमावदार तथा खूब इस्तेमाल की गई सीढ़ियों से नीचे उतर गए। वे इतने गहरे उतरते जा रहे थे कि डीन को लगा कि वे टैगस नदी के पेन्दे तक पहुँच चुके हैं। और नदी अब उनके ऊपर बह रही है। सीढ़ियों के खत्म होने पर एक कोठरी थी, जिसमें कई पुस्तकें और एक अलमारी में जादुई उपकरण रखे थे। दोनों पुस्तकों के पन्ने पलट रहे थे कि अचानक दो व्यक्ति आए। उनके हाथ में एक पत्र था। यह पत्र डीन के चाचा (जो बिशप थे) का था। पत्र से पता चला कि डीन के चाचा गम्भीर रूप से बीमार हैं। और अगर डीन उन्हें ज़िन्दा देखना चाहते हैं तो फौरन लौटें। डीन बड़े अशान्त हुए। एक तो इसलिए कि बिशप बीमार थे, पर इसलिए भी कि जादूविद्या के अध्ययन में यूँ बाधा आ रही थी। आखिर उसने सोच-विचारकर अध्ययन जारी रखना तय किया और बिशप से माफी माँगते हुए एक पत्र उन्हें लिख भेजा।

तीन दिन बाद कई लोग शोकवस्त्र पहने, डीन के लिए कुछ और पत्र लेकर आए। पत्रों में डीन ने पढ़ा कि बिशप की मृत्यु हो गई थी। बिशप के उत्तराधिकारी का चुनाव हो रहा था और इंशाअल्लाह डीन ही शायद उस पद पर चुन लिए जाएँ। खतों में यह भी सुझाया गया था कि बेहतर हो कि वे चुनाव के समय अनुपस्थित रहें।

दस दिन और गुज़र गए। और तब उम्दा वस्त्रों में सजे-धजे दो सामन्त वहाँ आए। वे डीन के पैरों के सामने घुटनों पर झुके, हाथ थामकर उसे चूमा और बिशप कह उसका अभिवादन करने लगे। डॉन इलान यह सब देख खुश हो गए। वे बिशप से बोले कि यह बेहद सुखद बात है कि उनके घर यह शुभ समाचार आया है। इसके लिए वे ईश्वर के शुक्रगुज़ार हैं। साथ ही उन्होंने बिशप से कहा कि अब डीन का जो पद खाली हुआ है वह पद उनके पुत्र को दे दिया जाए। इस पर बिशप महोदय ने कहा कि वे यह पद पहले ही अपने भाई के लिए तय कर चुके हैं, पर चर्च में कोई दूसरा पद वे इलान के बेटे के लिए ज़रूर तलाशेंगे। उन्होंने अनुरोध किया कि वे तीनों ही साथ-साथ सान्तियागो के लिए रवाना हो जाएँ।

वे सान्तियागो शहर की ओर बढ़ चले। वहाँ उनका बड़ी धूमधाम से स्वागत हुआ। छह माह ही बीते थे कि पोप के सन्देशवाहक बिशप के पास आए। उन्होंने बिशप के सामने तोउलूसे के आर्च बिशप का पद सम्भालने का प्रस्ताव रखा।

साथ ही कहा कि बिशप का पद किसे सौंपा जाएगा यह निर्णय भी डीन करेंगे।

जब इलान ने यह समाचार सुना तो डीन को पुराना वादा याद दिलाया और कहा कि बिशप का खाली पद उनके बेटे को दे दिया जाए। आर्च बिशप बोले कि यह पद तो वे अपने पिता के भाई के लिए चुन चुके हैं, पर क्योंकि उन्होंने डॉन इलान पर कृपा करने का वादा किया है, अतः वे अपने पुत्र के साथ तोउलूसे चलें, ताकि बाद में कुछ किया जा सके। आर्च बिशप से सहमत होने के अलावा इलान के पास कोई चारा न था। सो वे प्रस्ताव मान गए।

तीनों तोउलूसे के लिए निकल पड़े जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। प्रार्थना सभाएँ आयोजित हुईं। दो-चार वर्ष और बीत गए। इस बीच पोप की मृत्यु हो गई। शेष सभी कार्डिनलों ने मिलकर हमारे इन्हीं डीन को पोप चुन लिया। यह समाचार सुन इलान ने पवित्र पोप के चरण चूमे और उन्हें उनके वादे की याद दिलाई। इलान ने कोर्डिनल का रिक्त पद अपने पुत्र के लिए माँगा। पोप महोदय बोले कि वे डॉन इलान की लगातार की जाने वाली माँगों से आज़िज़ आ चुके हैं, और अगर वे ऐसे ही अवसर तलाशते रहेंगे तो वे उन्हें जेल में ठुँसवा देंगे।

बेचारे डॉन इलान सिर्फ यही कह पाए कि वे स्पेन लौटना चाहेंगे और उन्होंने पोप से लम्बी समुद्री यात्रा के दौरान खाने के लिए कुछ माँगा। पोप ने यह करने से भी मना कर दिया। इस पर डॉन इलान ने (जिनका चेहरा अचानक बदल गया था) स्थिर आवाज़ में कहा, "फिर तो मुझे वे तीतर ही खाने होंगे जो मैंने आज रात के लिए पकाने को कहा था।"

सेविका सामने आई और इलान ने तीतर भूनने की आज्ञा दी। अचानक पोप महोदय ने पाया कि वे तोलेडो की भूमिगत कोठरी में हैं। और हाँ, सान्तियागो के डीन के ही पद पर हैं। डीन इतने शर्मसार हुए कि कहने को कुछ सूझा ही नहीं।

डॉन इलान ने कहा कि यह परीक्षा पर्याप्त थी। उन्होंने डीन को तीतर तो नहीं ही खिलाए दरवाज़े का रास्ता ज़रूर दिखा दिया। फिर पूरे शिष्टाचार के साथ उनकी यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देकर विदा कर दिया।

अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हाथ की सफाई उर्फ नौकरी से हाथ धोने की कथा...

आज हाथ धोना स्वस्थ रहने के लिए एक ज़रूरी चीज़ माना जाता है। रोगों के फैलाव को रोकने में यदि कोई चीज़ सबसे कारगर पाई गई है तो वह है हाथ की सफाई। खास तौर से शौच के बाद और खाना खाने से पहले हाथ धोना बहुत ज़रूरी माना जाता है। आखिर यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है? वैसे तो खाना खाने के पहले व बाद में, शौच के बाद हाथ धोना एक परिपाटी ही है। इसके पीछे सोच शायद यही है कि इन मौकों पर हाथ गन्दे हो जाते हैं। पहले मिट्टी या राख से हाथ धोए जाते थे। अब तो साबुन चल निकले हैं।

आधुनिक समय में हाथ धोने का महत्व (खासकर डॉक्टरों के लिए) 150 साल पहले पहचाना गया था। जैसा कि हमेशा होता है, हाथ धोने जैसी साधारण सलाह पर भी काफी बावेला मचा था। आइए इस मज़ेदार किस्से का लुत्फ उठाएँ।

किस्सा यूँ है कि...

1822 में एक फ्रांसिसी वैज्ञानिक ने देखा कि ब्लीचिंग पावडर का घोल शवों की बदबू दूर करने में बहुत कारगर रहता है। उन्हें समझ में आ गया कि इसका उपयोग एक जीवाणुनाशी के रूप में किया जा सकता है। 1825 में अपने शोध पत्र में उन्होंने कहा कि छूत की बीमारियों से पीड़ित मरीज़ों की जाँच करने वाले चिकित्सक यदि क्लोरीन के घोल से अपने हाथ धोएँ तो बीमारी की रोकथाम में मदद मिलेगी।

1846 में इग्नेज़ सेमलवाइस ने विएना के आम अस्पताल में एक महत्वपूर्ण अवलोकन किया। वहाँ के एक क्लिनिक में प्रसव का काम चिकित्सक व उनके छात्र करवाते थे जबकि दूसरे क्लिनिक में यही काम दाइयाँ करवाती थीं। सेमलवाइस ने पाया कि क्लिनिक-1 में जच्चा मृत्यु दर क्लिनिक-2 से कहीं ज़्यादा थी। सेमलवाइस ने यह भी देखा कि चिकित्सक व छात्र शव परीक्षा कक्ष से सीधे प्रसव कक्ष में जाते हैं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि हो न हो उनके हाथों पर शव के कण चिपके रह जाते हैं जो बाद में जच्चाओं में प्रसव ज्वर का कारण बनते हैं। इसके आधार पर उन्होंने आग्रह किया कि प्रसव करवाने

रंगे हाथ

इटली के चित्रकार, फोटोग्राफर ग्यूडो डेनियल को चुनौतियाँ पसन्द हैं। जब एक विज्ञापन एजेंसी से उन्हें जानवर "बनाने" का काम मिला तो उनके दिमाग के घोड़े दौड़ने लगे।

से पहले सारे चिकित्सक व छात्र अपने हाथ क्लोरीन के घोल से धोएँ। इस छोटे से कदम की बदौलत क्लिनिक-1 में जच्चा मृत्यु दर में नाटकीय गिरावट आई। हाथ धोने के असर का यह पहला प्रमाण था।

मगर विएना अस्पताल के चिकित्सक इससे खुश होने की बजाय नाराज़ हो गए। उनको यह बात बिल्कुल नहीं जँची कि उनके हाथों को गन्दा कहा जा रहा है। उन्होंने सेमलवाइस को गद्दार वगैरह भी कहा। कुछ लोग बताते हैं कि विएना अस्पताल से सेमलवाइस को बर्खास्त कर दिया गया था जबकि कुछ लोगों का कहना है कि तंग आकर उन्होंने खुद ही इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद विएना अस्पताल फिर से हाथ न धोने की परिपाटी पर लौट गया और जच्चा मृत्यु दर फिर से बढ़ गई। लगभग इसी समय ओलिवर होम्स ने निष्कर्ष निकाला कि प्रसव ज्वर चिकित्सकों के हाथों के ज़रिए फैलता है। उन्होंने इससे बचने के उपाय भी बताए थे मगर किसी ने सुने नहीं।

सेमलवाइस ने किसी और अस्पताल में काम शुरू कर दिया और वहाँ भी अपना सन्देश दिया। किस्से का दुखद पहलू यह है कि सेमलवाइस विक्षिप्त हो गए थे क्योंकि उन्हें समझ नहीं आता था कि क्यों ये डॉक्टर अपने अहंकार के चलते बदलाव का इतना विरोध करते हैं। जबकि बदलाव कोई बहुत बड़ा नहीं था – बस हाथ ही तो धोने थे।

साबुन से हाथ धोना ज़रूरी क्यों है?

यह किस्सा एक बात तो स्पष्ट कर देता है। इतनी छोटी-छोटी बातों को बदलना भी कितना मुश्किल होता है। जब चिकित्सकों में इतना प्रतिरोध था तो आम लोगों की प्रतिक्रिया की कल्पना ही की जा सकती है।

तो सवाल यह है कि आम व्यक्ति के लिए हाथ धोने की बात के पीछे हम हाथ धोकर क्यों पड़े हैं। आखिर आम लोग तो शव परीक्षा जैसे काम करते नहीं। इस संदर्भ में एक बात याद रखने की है। हमारा शरीर सूक्ष्मजीवों का अड्डा है। कहते हैं कोई 300 प्रकार के सूक्ष्मजीव हमारे साथ रहते हैं। इनमें से कई सारे जीव चमड़ी पर बसते हैं। अधिकांश हानिरहित हैं, कुछ हानिकारक भी हैं। ये त्वचा पर ही रहें तो कम ही नुकसान पहुँचाएँ। मगर हम इन्हें वहाँ रहने दें तब ना। हम अपनी उँगलियों को मुँह में डालेंगे, नाक में डालेंगे, कान में डालेंगे। फिर उन्हीं हाथों से खाना खाएँगे। इससे सूक्ष्मजीवों को शरीर के अन्दर आने का मौका मिलता है। कई बार हमारे हाथों का सम्पर्क सूक्ष्मजीवों से विशेष तौर पर होता है। मल में बड़ी संख्या में सूक्ष्मजीव होते हैं। यह किसी एक व्यक्ति या मरीज़ की बात नहीं है। सामान्य व्यक्ति के मल में तमाम सूक्ष्मजीव होते हैं। कहते हैं कि मल का एक-तिहाई वज़न तो सूक्ष्मजीवों के कारण ही होता है। इसलिए मलत्याग के समय हमारे हाथों का सम्पर्क इन सूक्ष्मजीवों से होता है। इसके अलावा किसी बीमार व्यक्ति की देखभाल वगैरह के दौरान भी हमारा सम्पर्क इनसे होता है। इसलिए इनको शरीर में जाने से रोकने का सबसे अच्छा तरीका हाथ की सफाई है। साधारण व्यक्ति के लिए हाथ धोने के लिए साबुन व पानी ही पर्याप्त है। शायद राख से भी काम चल सकता है। रोज़मर्रा की सफाई के लिए एंटीसेप्टिक घोलों का उपयोग करना ठीक नहीं है क्योंकि इससे कई सूक्ष्मजीवों में प्रतिरोध क्षमता पैदा हो सकती है।

एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से साभार

उनकी नज़र एक अनूठे कैनवास – अपने और अपने बच्चों के हाथों पर टिकी। और वे जुट गए उन्हें कभी चीता, कभी हाथी, कभी चील का रूप देने में। सबसे पहले उन्होंने पंख फैलाए हुए चील बनाई। इसे बनाने में पूरे दस घण्टे लगे। कई बार बड़ा बुरा लगता है कि इतनी देर की मेहनत हाथ धोने के साथ बह जाती है। पर यह क्या कम है कि एक नया कैनवास सामने होता है, एक नई चीज़ के लिए।

इतिहास के स्रोतों से...

सी एन सुब्रह्मण्यम्

एक था बनारसीदास, जौनपुर का रहने वाला। वह हीरे जवाहरात बेचता था। उसे भी उसी तरह नफा नुकसान होता था जैसे उस ज़माने के व्यापारियों को होता था। लेकिन बनारसी को पढ़ने-लिखने का शौक था। जब वह पचपन साल का हुआ, तो उसको लगा, "मेरी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा तो बीत गया। (वह मानता था कि वह एक सौ दस साल जिएगा!) यानी मेरी आधी कहानी तो पूरी हो चुकी है। क्यों न मैं अपनी अब तक की जीवनी लिख डालूँ।" उसे कुछ छन्द लिखने का अभ्यास भी था। उसने अपनी आत्मकथा कविता के रूप में लिखी, जिसे उसने *अर्धकथानक* नाम दिया।

जब अकबर बादशाह की मौत हुई...

मज़े की बात यह है कि बनारसीदास आज से लगभग चार सौ साल पहले रहता था – बादशाह अकबर के ज़माने में। उसकी आत्मकथा से हम उस समय के लोगों, खासकर व्यापारियों के दुख-दर्द तथा भावनाओं के बारे में करीबी से जान पाते हैं।

यहाँ इस आत्मकथा का एक रोचक किस्सा तुम्हारे लिए दे रहे हैं। वह मुगल इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था और बनारसी के जीवन में भी। उस दिन अकबर की मौत हुई थी...

संवत सोलह सौ बासठा। आयौ कातिक पावस नठा।।
छत्रपति अकबर साहि जलाल। नगर आगरे कीनौं काल।।
आई खबर जौनपुर मांह। प्रजा अनाथ भई बिनु नाह।।
पुरजन लोग भए भयभीत। हिरदै व्याकुलता मुख पीत।।
अकस्मात सुनी वानारसी, सुनी अकबरकौ काल।
सीढ़ी परि बठयौ हुतो, भयो भरम चित चाल।।
आड़ तबाला गिरि पर्यौ, सक्यौ न आप राखि।

...संवत 1662 (यानी सन् 1605) के कार्तिक माह में आगरा शहर में बादशाह जलालुद्दीन अकबर का देहान्त हो गया। यह खबर जौनपुर शहर पहुँची तो जनता को लगा कि वह अनाथ हो गई। सब शहरवासी भयभीत हो गए। उनका मन व्याकुल हो उठा और चेहरे के रंग उतर गए। सीढ़ी पर बैठे बनारसी ने अचानक यह खबर सुनी तो वह भ्रमित हो गया। अपने आपको सम्भाल नहीं पाया और सीढ़ी से औंधा गिर पड़ा।

इस बीच नगर मैं सोर। भयौ उदंगल चारिहु ओर।।
घर घर दर दर दिए कपाट। हटवानी नहीं बैठे हाट।।
भले बस्त्र अरू भूसन भले। ते सब गाड़े धरती तले।।
हंडवाई गाड़ी कहुं और। नगदी माल निभरमी ठोर।।
घर घर सबनि बिसाहे सस्त्र। लोगन्ह पहिरे मोटे वस्त्र।।
ओढ़े कंबल अथवा खेस। नारिन्ह पहिरे मोटे बेस।।
ऊंच नीच कोउ न पहिचान। धनी दरिद्री भए समान।।
चोरि धारि दसै कहुं नांहि। यौं ही अपभय लोग डरांहि।।

...इस बीच शहर में शोर मच गया। चारों ओर हाहाकार मच गया। सभी घरों के किवाड़ बन्द किए गए। हाट बाज़ार खाली हो गए। अच्छे कपड़ों और आभूषणों को ज़मीन के नीचे गाड़कर छुपाया गया। कुछ लोग अपने पैसे व सामान गाड़ियों में भरकर शहर छोड़कर चल दिए। घर-घर लोग शस्त्र इकट्ठा करने लगे और मोटे कपड़े पहनने लगे। कम्बल व मोटे सूती वस्त्र पहनने लगे। महिलाओं ने भी ऐसा ही किया। अमीर व गरीब एक से दिखने लगे। यह चोरों के डर से नहीं था, बस यूँ ही लोग डरे हुए थे।

धूम धाम दिन दस रही, बहुरी बरती सांति।
चीठी आई सबनिक, समाचार इस भांति।।
प्रथम पातिसाही करी, बावन बरस जालाल।
अब सोलहसै बासठे, कातिक हूओ काल।।
अकबरको नंदन बड़ौ, साहिब साहि सलेम।
नगर आगरै मैं तकत, बैठी अकबर जेम।।
नांउ धरायौ नूरदीं, जहांगीर सुलतान।
फिरि दुहाई मुलकमै, बरती जहं तहं आन।।
इहि विधि चीठीमैं लिखी, आई घर घर बार।
फिरी दुहाई जौनपुर, भयौ सु जयजयकार।।
खरगसेन के घर आनंद। मंगल भयौ गयौ दुख-दंद।।
बनारसी कियौ असनान। कीजै उत्सव दीजै दान।।

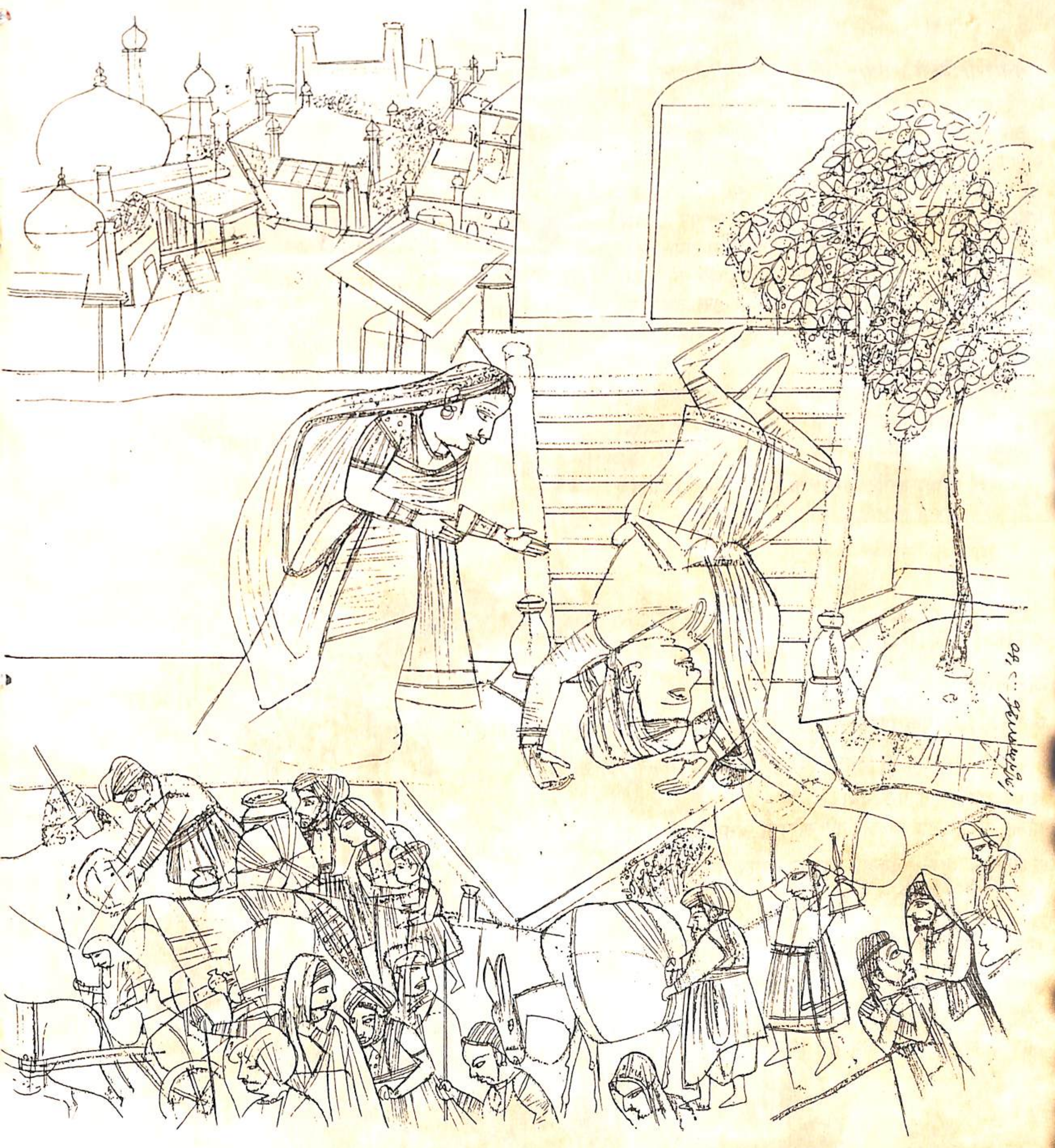

इस प्रसंग पर गणेश पायन का बनाया एक चित्र

बनारसी कियौ असनान। कीजै उत्सव दीजै दान।।

ऐसा हाहाकार दस दिनों तक बना रहा। फिर इस प्रकार की एक चिट्ठी सब के घर आ पहुँचीः जलालुद्दीन अकबर बावन साल बादशाही करके सोलह सौ बासठ वर्ष के कार्तिक मास में मर गए। अकबर का बड़ा बेटा, शाह सलीम, आगरा के सिंहासन पर अकबर जैसे बैठ गया। बादशाह बनने के बाद उसने अपना नाम रखा, नूरुद्दीन जहाँगीर सुलतान। पूरे राज्य को राहत मिली और उसकी हुक्म चलने लगी। इस तरह की चिट्ठी घर-घर पर आई। इससे जौनपुर में राहत मिली और सबने जयजयकार की।

खरगसेन के घर भी खुशियाँ मनाई गईं और सब दुख द्वंद्व मिट गए। बनारसी ने भी स्नान किया और उत्सव मनाया और दान दिया।

गणेश पायन हमारे समय के एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं। उन्होंने अकबर के समय की चित्रकला का अध्ययन करके इस प्रसंग पर एक बहुत ही खूबसूरत चित्र बनाया है। उसका भी मज़ा लेना।

क्या तुम इस प्रसंग पर कोई और चित्र बनाना चाहोगे?

अब इस माह के सवालः

1. किसी राजा के मरने पर जनता इतनी भयभीत क्यों होती होगी?
2. बनारसी ने इनके लिए कौन-से शब्दों का प्रयोग किया - किवाड़, गहने, बादशाह। खेस शब्द का अर्थ क्या हो सकता है?

हमेशा की तरह अच्छे उत्तरों को हम अगले अंकों में छापेंगे और पुरस्कार भी पहुँचाएँगे।

मीठी चीनी...

अनमोल

ज़ेन सिद्ध से एक शिष्य ने पूछा, "विश्व में सबसे अनमोल वस्तु क्या है?"
सिद्ध ने गम्भीरता से जवाब दिया, "मरी हुई बिल्ली की खोपड़ी।"
शिष्य चक्कर में पड़ गया।
बोला, "मरी हुई बिल्ली की खोपड़ी अनमोल कैसे हुई?"
"क्योंकि," गुरू ने कहा, "उसका मूल्य किसी को नहीं मालूम।"

एक चीनी कहावत है

अगर कहीं से तुम्हें दो पैसे मिलें तो एक पैसे की रोटी ले लो और दूसरे पैसे से एक फूल। रोटी तुम्हें ज़िन्दा रखेगी और फूल तुम्हें जीने का ढंग सिखाएगा।

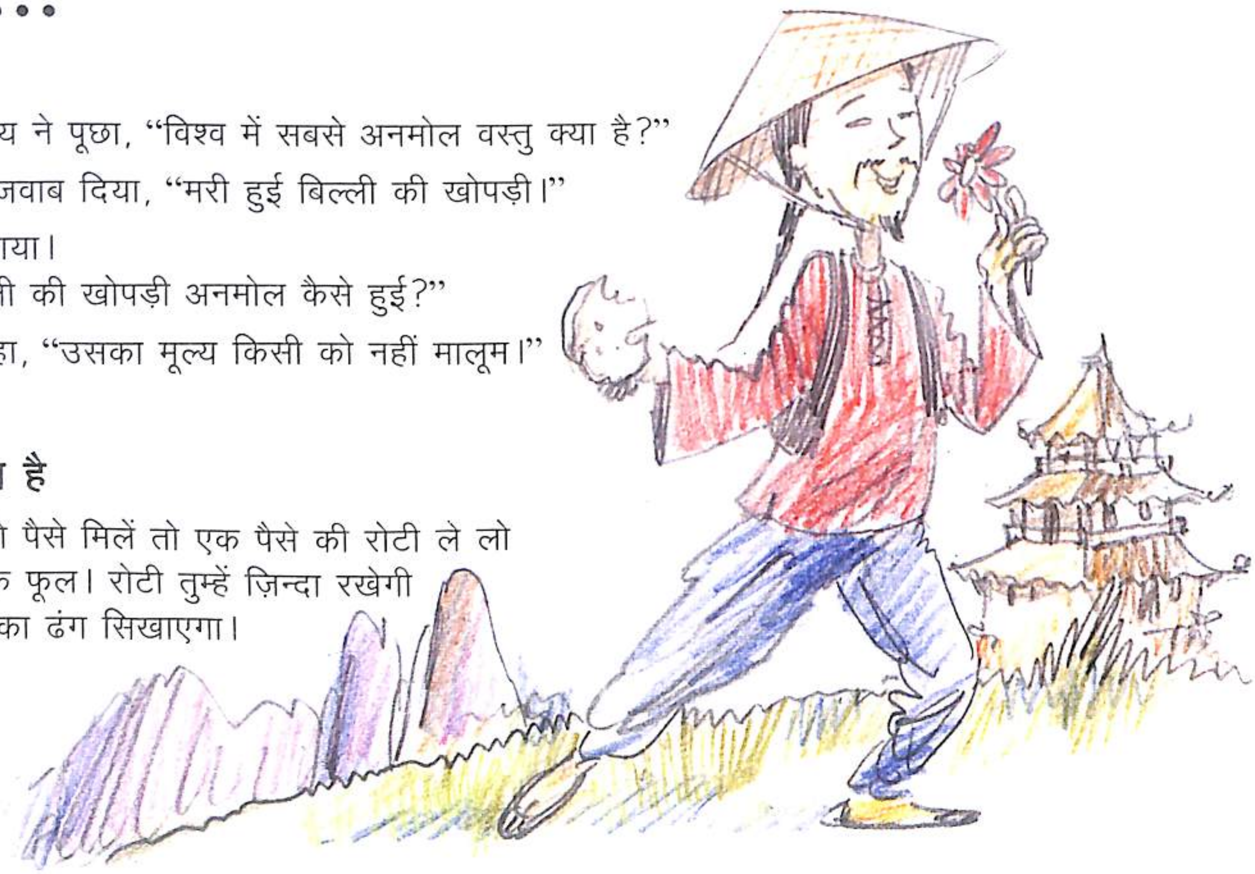

ब्लाउज़

मेरा ब्लाउज़
मेरे बच्चे का गुल्लक है!
कहीं से भी घूमता-टहलता हुआ
आता है
और बड़े निश्चिंत भाव से
पोस्ट कर जाता है
चकमक पत्थर, सीपी
सिगरेट की पन्नियाँ,
खिलौनों के नट-बोल्ट,
सारे अखोर-बखोर!

कभी-कभी मैं ऊबकर
उसे मारने दौड़ती हूँ -
अक्सर तो वह भाग जाता है
और अगर कभी पिट गया तो
सुकुर-सुकुर रोता-बिसुरता है
नाक-आँख
सब रगड़ देता है
ब्लाउज़ से!
बेचारे ब्लाउज़ की
नन्ही-सी जान
डरकर चिपक जाती है
मुझसे!

अनामिका

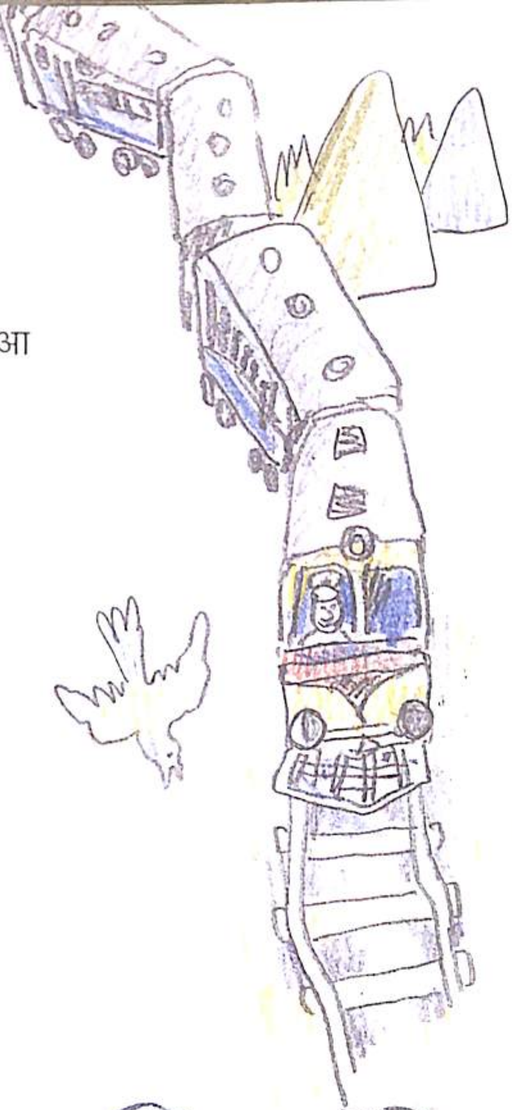

रेल चल रही

रेल चल रही हम सवार हैं
देख रहे खिड़की पर बैठे
कभी साइकिल
कभी कार है।
कोई चला रहा स्कूटर
चली आ रही फिर से मोटर।
ट्रैक्टर ट्रक भी आते-जाते
बस का चलना लगातार है।
खेत गाँव भी
खूब मिल रहे,
नीले-नीले
फूल खिल रहे।
मिलती जातीं नदियाँ नहरें।
मन में उठतीं कैसी लहरें।
आती वह बैलों की गाड़ी
दूर दीखती
एक पहाड़ी।
हवा चल रही ठण्डी-ठण्डी
कभी बह रही ज़ोरदार है।
रेल चल रही हम सवार हैं।

प्रयाग शुक्ल

रविन्द्र केसकर

तुम भी बनाओ

बातूनी कौआ

इस बार बारी है बातूनी कौए की। बात कौए से शुरू ज़रूर हुई है पर पहुँचेगी कहाँ यह कहना मुश्किल है। ओरीगैमी यानी कागज़ मोड़कर क्या-क्या न बनाने की कला की खूबी यही है। किसी एक बिन्दु तक पहुँचकर मूल तकनीक में थोड़े-थोड़े बदलाव कर बहुत-सी चीज़ें बना सकते हैं। इसमें तुम्हारी कल्पना शक्ति का भरपूर इस्तेमाल होगा।

हाँ, मूल खिलौने को अच्छी तरह से समझना ज़रूरी है। शुरू करते हैं सामान्य कौए और उसके बच्चे से।

1. एक चौकोर कागज़ लो। कागज़ के सफेद हिस्से के चारों कोनों पर A, B, C, D लिख लो। D को B से मिलाकर AC पर पक्का मोड़ बनाकर खोल लो। इसी तरह C को A से मिलाकर BD पर पक्का मोड़ बनाओ। BD को मुड़ा रहने दो। इसके केन्द्र को O नाम दे दो। C को O से मिलाकर PQ मोड़ बना लो।

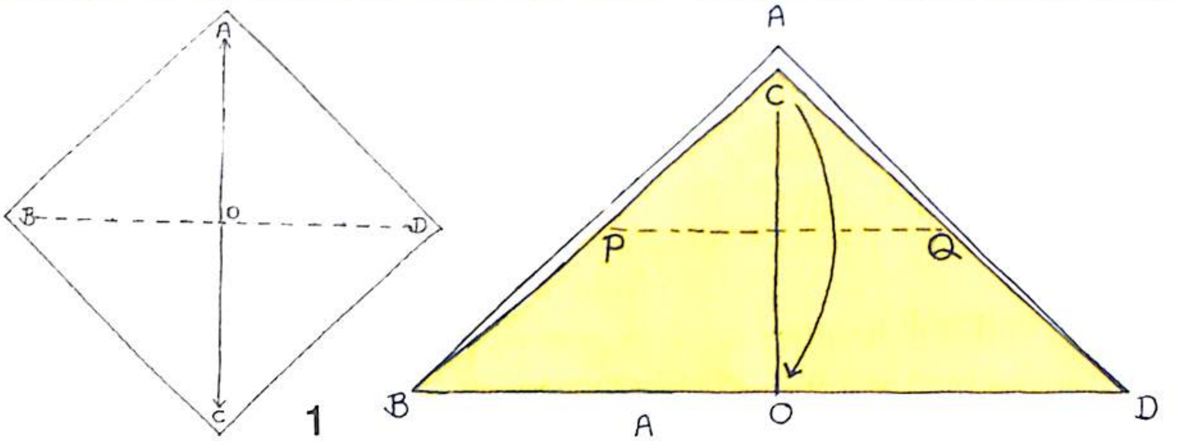

1

2. अब दो हिस्सों वाला सफेद A P C Q चौकोर तुम्हारे सामने होगा। AP को PQ से मिलाकर सिर्फ मध्य रेखा AC तक ही मोड़कर खोल दो। इसी प्रकार AQ भुजा को भी QP से मिलाकर सिर्फ मध्य रेखा AC तक ही मोड़कर खोल दो। CP व CQ भुजाओं को भी इसी तरह मोड़कर खोल लो।

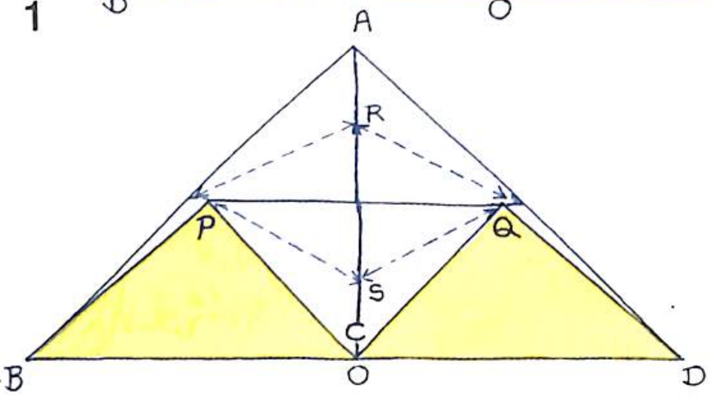

2

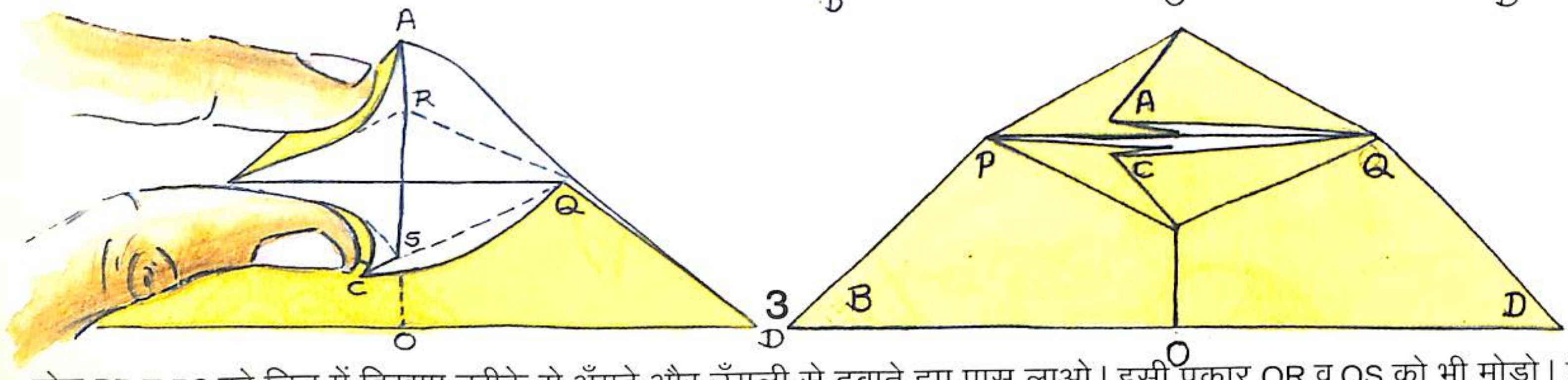

3

3. मोड़ PR व PS को चित्र में दिखाए तरीके से अँगूठे और उँगली से दबाते हुए पास लाओ। इसी प्रकार QR व QS को भी मोड़ो। ऐसा करने पर कौए की नाक बन जाएगी। इस तकनीक को ''खरगोश के कान'' बनाना कहते हैं।

4. चित्र में देखते हुए B को D से पीछे की ओर से मोड़ दो। यह बन गया सामान्य कौआ।

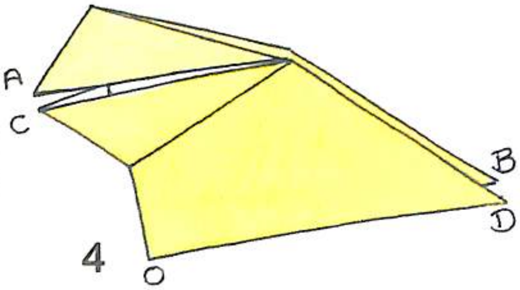

4

कौए के पंखों को खोलो, बन्द करो।
वो काँव...काँव करने लगेगा।

इसके लिए पहला मोड़ तो पहले जैसा होगा।

2. C को O से काफी पहले मोड़कर PQ बना लो। अबकी बार बना चौकोर पहले वाले APCQ से छोटा होगा। चोंच भी छोटी ही बनेगी। थोड़ी बड़ी चोंच बनाना चाहो तो C को O बिन्दु से थोड़ा पहले ही लाकर PQ बना लो। फिर खरगोश के कान तकनीक से चोंच बना लो। B व D को चित्र में दिखाए तरीके से मोड़ लो। B कोने को D से मिला दो।
3. O का नुकीला सिरा तिरछा मोड़कर खोल दो। इसे अन्दर पेट की तरफ मोड़ दो।
4. चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर दोनों निचले कोनों को भी मोड़कर घुमावदार पेट बना लो।

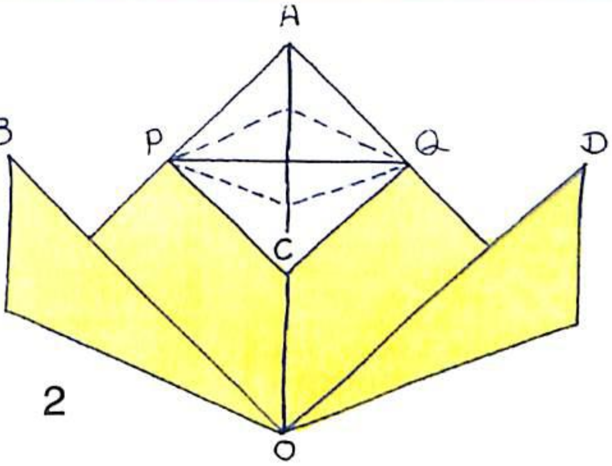

2

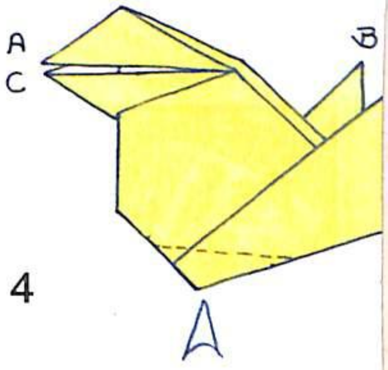

4

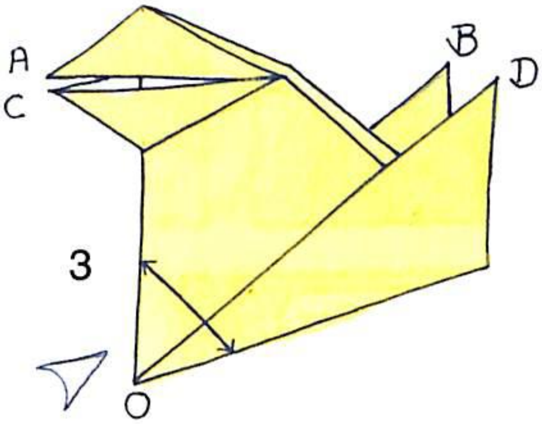

3

नन्हा कौआ तैयार है।

अगली बार मूल तकनीक में बदलाव कर विकसित कौआ बनाएँगे। तब तक तुम ही कोशिश करना इसमें बदलाव लाने के लि

चित्र - जितेन्द्र व

फरवरी अंक की चित्र पहेली के हल

1 घ	ड़ि	या	2 ल		3 स	वा		4 चि
ड़ा			ह		त		5 को	ना
	6 हा		7 सु	अ	र		8 ल	ब
9 ब	र	10 त	न		11 ह	12 की	म	
स		र		13 सौ		म		14 का
	15 ता	बू	16 त		17 प	त	18 झ	र
19 जि		20 ज	ल	पो	त		ड़ी	
21 रा	त		22 घ		23 वा	ण		24 ता
फ		25 गौ	र		र		26 मो	र

रोटी का पेड़

रोटी अगर पेड़ पर लगती
तोड़-तोड़ कर खाते,
तो पापा क्यों गेहूँ लाते
और उन्हें पिसवाते?
रोज़ सवेरे उठकर हम
रोटी का पेड़ हिलाते,
रोटी गिरतीं टप टप टप टप
उठा-उठा कर खाते।

- निरंकारदेव सेवक

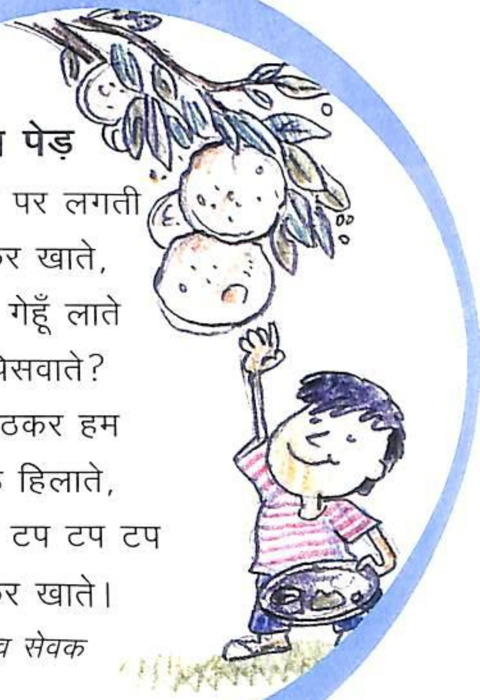

डाक्टर चींचूं के चमत्कार

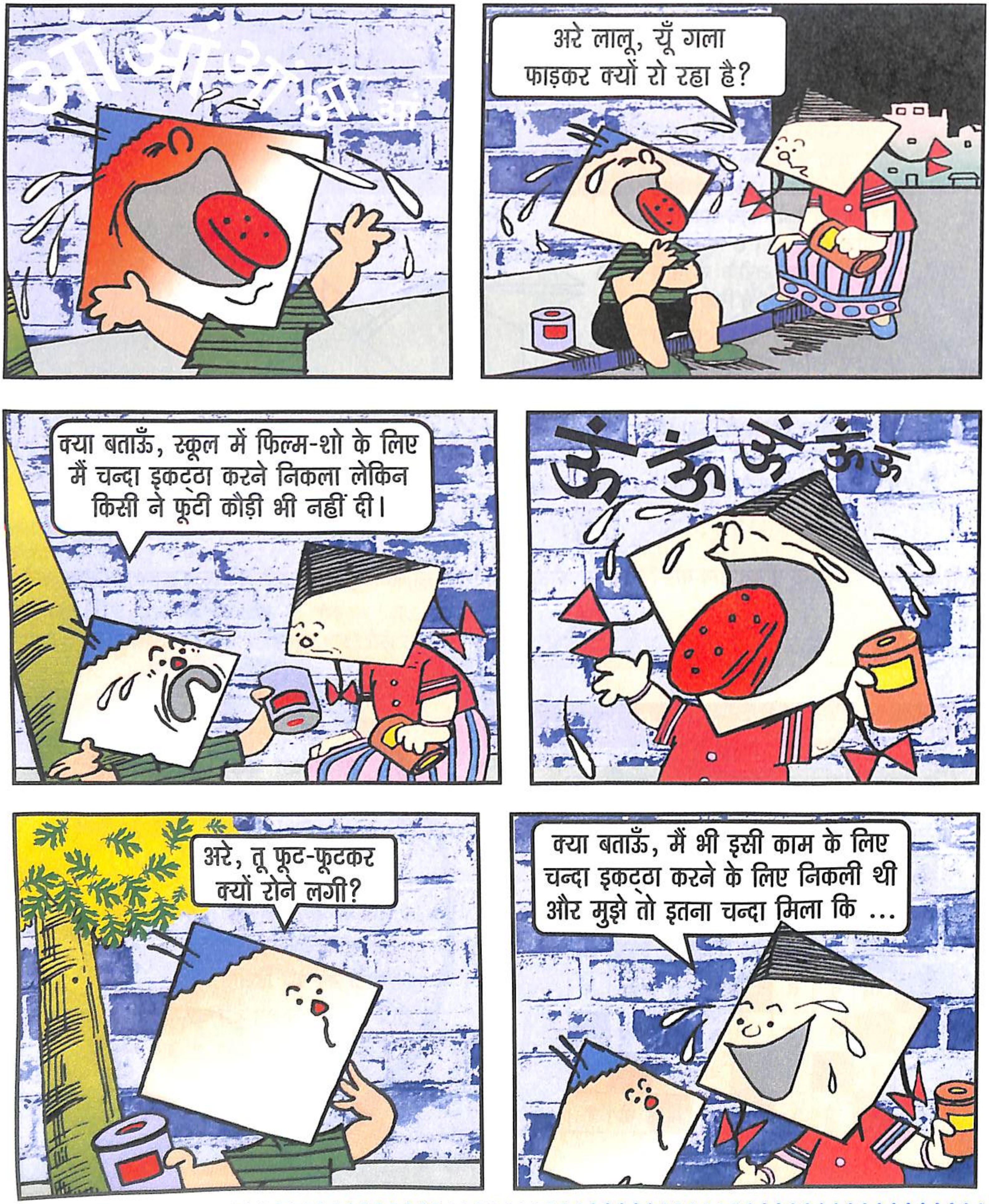

आबिद सुरती

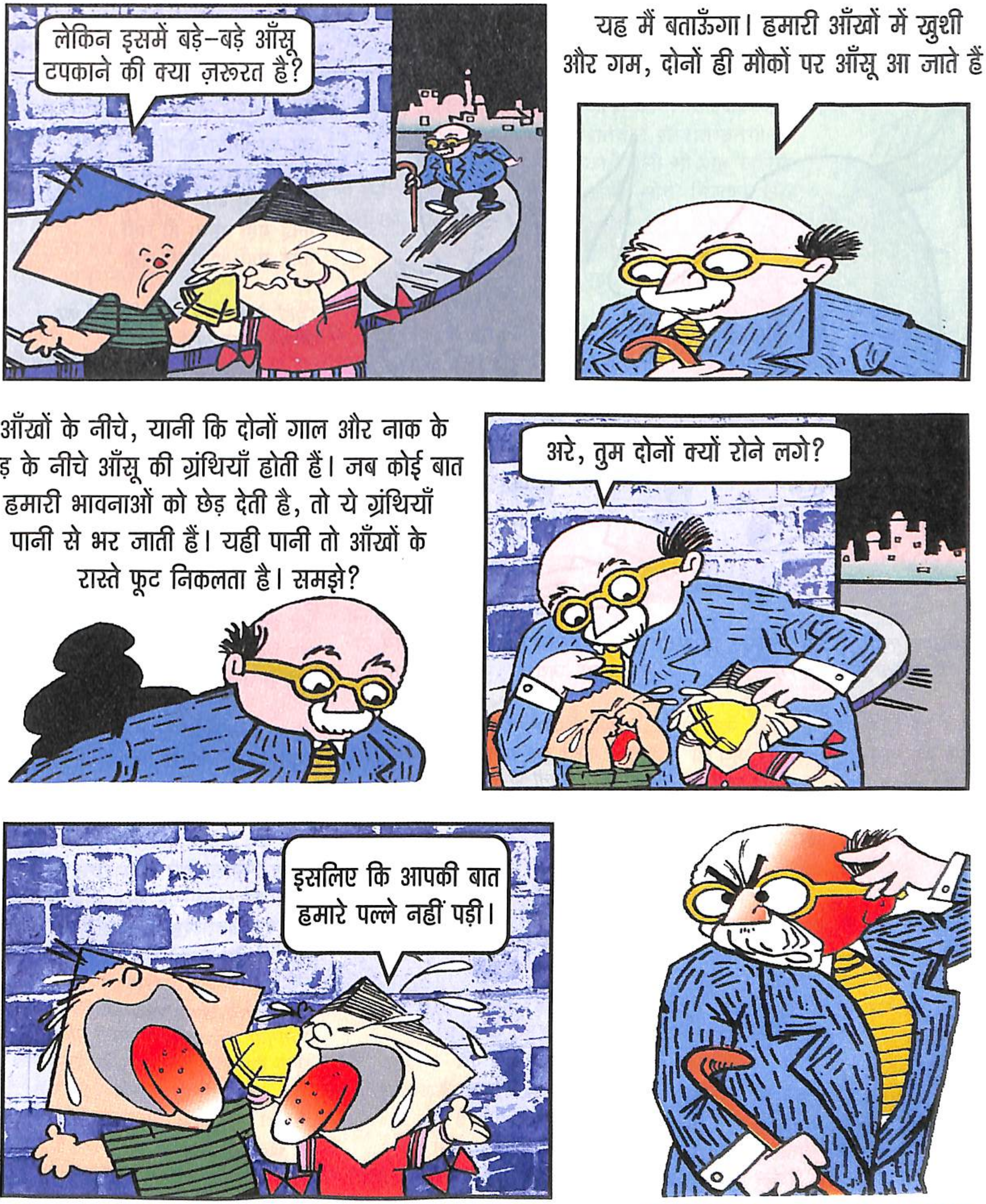
लेकिन इसमें बड़े–बड़े आँसू टपकाने की क्या ज़रूरत है?
यह मैं बताऊँगा। हमारी आँखों में ख़ुशी और गम, दोनों ही मौकों पर आँसू आ जाते हैं।
आँखों के नीचे, यानी कि दोनों गाल और नाक के जोड़ के नीचे आँसू की ग्रंथियाँ होती हैं। जब कोई बात हमारी भावनाओं को छेड़ देती है, तो ये ग्रंथियाँ पानी से भर जाती हैं। यही पानी तो आँखों के रास्ते फूट निकलता है। समझे?
अरे, तुम दोनों क्यों रोने लगे?
इसलिए कि आपकी बात हमारे पल्ले नहीं पड़ी।

एक नाटक

असग़र वजाहत

जयगान

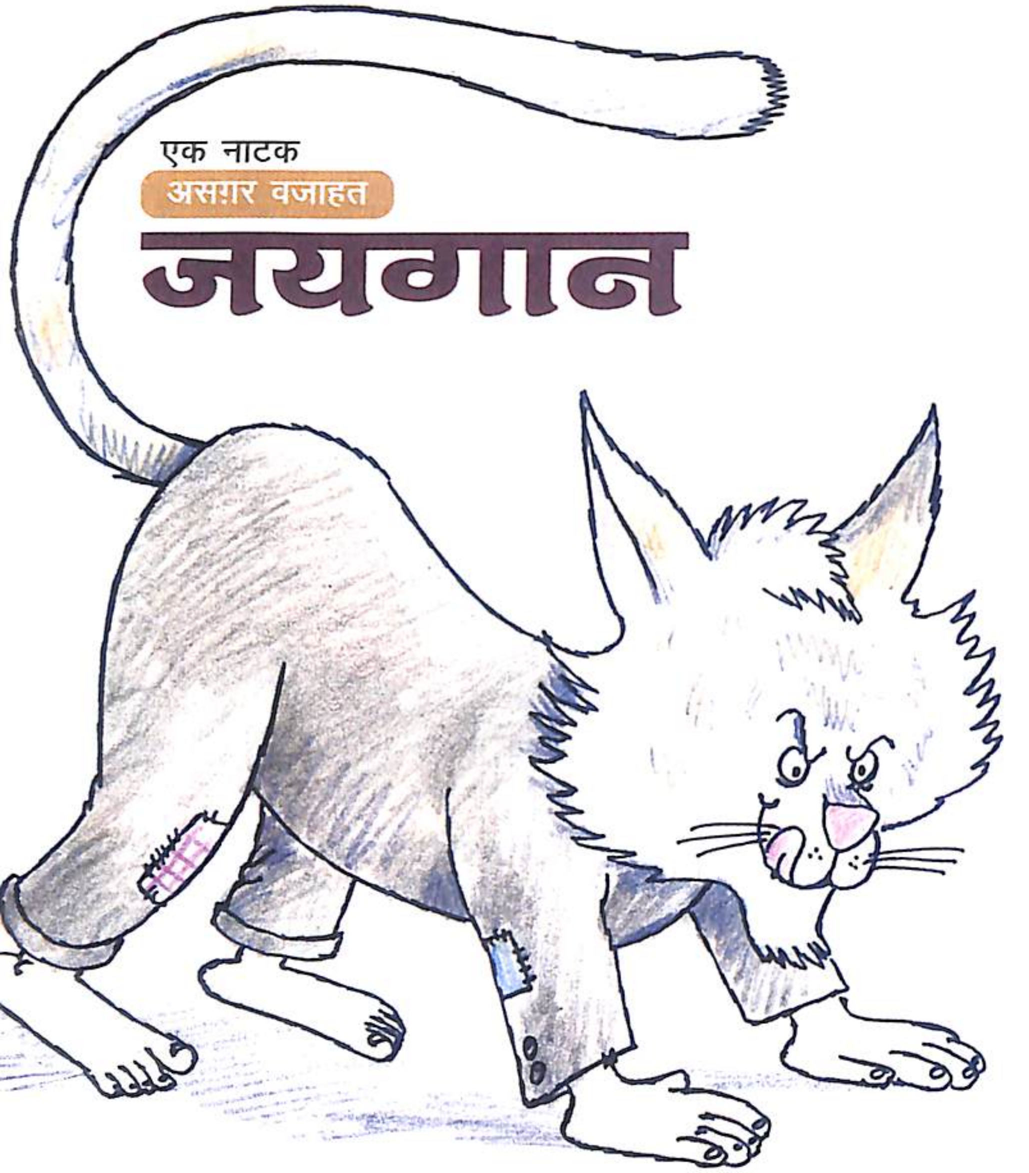

(मंच पर पुराने, टूटे-फूटे मकान का सेट। बच्चों का सामूहिक गान।)

जय हो, जय हो, जय-जय, जय हो
देश की जय हो धरती की जय हो
चाँद की जय हो सूरज की जय हो
दिन की जय हो रात की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय जय हो

कलम की जय हो, काग़ज़ की जय हो
हवा की जय हो, पानी की जय हो
गाँव की जय हो, शहर की जय हो
जीत की जय हो, हार की जय हो
पानी की जय हो, आग की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय जय हो

पापा की जय हो, बाबा की जय हो
भाई की जय हो, बहन की जय हो
मामा की जय हो, मोती की जय हो
आण्टी की जय हो, अंकल की जय हो
गाय की जय हो, बछड़े की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय-जय हो

(समूह में जयगान करते बच्चे मंच पर नृत्य करते हुए बाहर निकल जाते हैं। सूत्रधार अपनी पंक्तियाँ गाता है।)

सूत्रधार

हाथ जोड़ कर नमन करूँगा
फिर मैं अपने वचन कहूँगा
देखें सब मिलजुल कर देखें
एक निराला नाटक देखें

शहर के बाहर इक कोने में
पेड़ों की झुरमुट के बीच
खेतों से थोड़ा हट कर
सड़क जहाँ मुड़ जाती है
हवा वहाँ रुक जाती है
बस्ती के बिल्कुल कोने में
बना हुआ है घर ये पुराना
इस घर के सब पंछीवासी
पता नहीं कहाँ गए हैं
सन्नाटे का राज यहाँ है

दर टूटे, दीवारें टूटीं
खिड़की टूटी, शीशे टूटे
आँगन टूटा, सीढ़ी टूटी
घर का कोना-कोना टूटा
छत में दरारें पड़ी हुई हैं
पूरे घर में काई जमी है
कोई यहाँ रहता ही नहीं
कोई यहाँ आता ही नहीं

(चूहों के मेकअप में कई बच्चों का प्रवेश। समूह गान)

इस घर में अब हम रहते हैं
हम चूहे हैं, हम चूहे हैं, हम चूहे हैं
छोटे-छोटे प्यारे-प्यारे चूहे हैं
इस घर में अब हम रहते हैं

इस घर में करते हैं राज
इस घर में करते हैं राज
इस घर में बस चूहे हैं
हर कमरे कोठे, आँगन में
हर खिड़की दर, दरवाज़े में
चूहे हैं बस, चूहे हैं, बस चूहे हैं...

(समूह गान करते बच्चे मंच से निकल जाते हैं। दूसरे बच्चे चूहों के मेकअप में आते हैं ये कुछ बड़े बच्चे हैं। और समूह गान गाते हैं।)

सुबह निकल जाते हैं ऑफिस
शाम को वापस घर आते हैं
दिनभर खटते रहते हैं
रात में चैन से सोते हैं।

(समूह नृत्य करता रहता है। एक अभिनेता अलग होकर अपनी पंक्तियाँ गाता है।)

चूहा-1

मैं खेतों में जाता हूँ
छिप के खड़ा हो जाता हूँ

नज़र बचाकर लोगों की
गेहूँ के मोटे दानों को
ले चम्पत हो जाता हूँ।

चूहा-2
मैं एक घर में जाता हूँ
नाली में छिप जाता हूँ
रोटी जब पक जाती है
पूड़ी जब तल जाती है
चावल जब पक जाता है
मैं चुपके से धीरे-धीरे
रोटी का इक टुकड़ा लेकर
सीधा भाग निकलता हूँ।

चूहा-3
मैं मण्डी में जाता हूँ
बोरों के गोदाम में जाकर
जो मिलता है लाता हूँ
कभी चने खा जाता हूँ
कभी मटर ले आता हूँ
कभी जलेबी कभी इमरती
कभी मलाई, कभी मखाने
खाता हूँ बस खाता हूँ।

(अभिनेता मंच से चले जाते हैं और समूह गान के लिए बच्चे आते हैं।)

हर दिन एक नहीं होता है
सुख के पीछे दुख होता है
दुख के पीछे सुख होता है
कभी चाँदनी होती है तो
कभी अँधेर भी होता है
मिलता है कभी हलवा पूड़ी
कभी मिलेगी सूखी रोटी।
रात अँधेरी काली थी
बारिश होती थी घनघोर
पता नहीं क्यों, कैसे आया
मोटा, तगड़ा झबरीला
भूखा, प्यासा गर्वीला।

(कलाकारों की मण्डली चली जाती है। मंच पर बिल्ला आता है। वह चूहों पर हमला करता है। चूहे भागते हैं। सब मंच से चले जाते हैं। चूहा-1 आता है।)

चूहा-1
सुख के दिन गए हमारे
दुख की छाया आ ही गई।

चूहा-2
भयभीत पड़े रहते हैं बिलों में,
डर है समाया सबके दिलों में।

चूहा-3
जब भी हमें पा जाता है,
चबा-चबा खा जाता है।

चूहा-4
चलो करें एक मीटिंग हम
बैठ के सोचें टेक्निक हम
कैसे बचें बिल्ले से हम।

(चूहे एक गोले में बैठ जाते हैं दूसरे चूहे भी आ जाते हैं।)

चूहा-1
एक उपाय सोचा मैंने।

चूहा-3
हमें बताओ, हमें बताओ।

चूहा-1
कुत्ता एक ले आते हैं
कुत्ते खाते हैं बिल्ली को।

चूह-2
बहुत दूर की कौड़ी लाए
यह तो बहुत उत्तम है चाह।

चूहा-4
पर कुत्ते को लाए कौन?
जाकर उसे बुलाए कौन?
हम कुत्ते के पास गए
हमको चट कर जाएगा तो?

चूहा-1
हाँ यह तो सच कहते हो।

चूहा-2
घर के मालिक को ले आएँ?

चूहा-3
घर का मालिक आएगा
पहले हमें भगाएगा।

चूहा-6
सोचो, सोचो मिलकर सोचो
जोड़ो-जोड़ो मिलकर जोड़ो।
बातचीत से बात बनेगी
कोई भली-सी राह खुलेगी
सोचो, सोचो मिलकर सोचो।

चूहा-3
एक आइडिया आया है।

चूहा-4
बोलो, बोलो जल्दी बोलो।

चूहा-3
बिल्ली के गले में घण्टी बाँधें?
जहाँ-जहाँ वह जाएगी
घण्टी टुन-टुन बोलेगी।

चूहा-2
वाह भई वाह, वाह भई, वाह

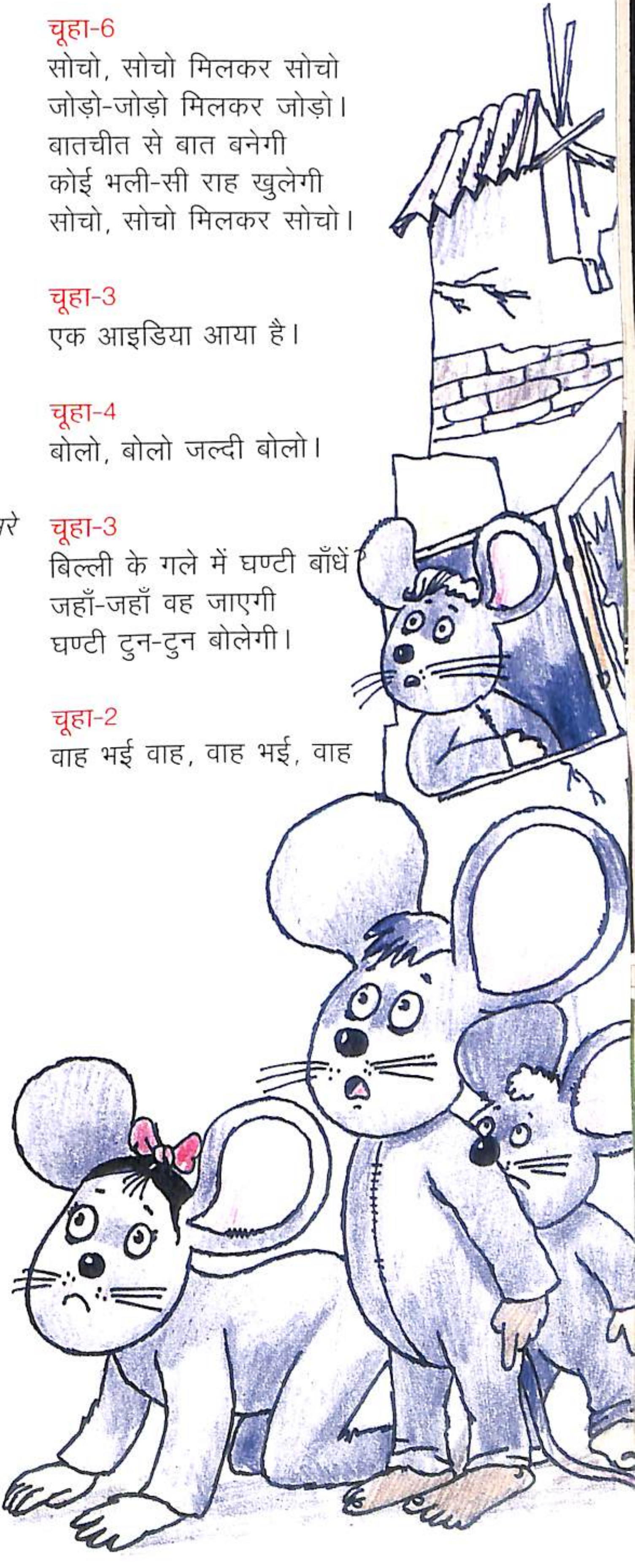

चूहा-1
घण्टी सुन हम भागेंगे
बिल में जा छिप जाएँगे।

चूहा-3
क्या कहने भई क्या कहने।

(कुछ चूहे जाते हैं और घण्टी ले आते हैं। उसे मंच पर रख देते हैं।)

चूहा-3
(घण्टी बजाता है।)
टन-टन-टन बजती है
कितनी अच्छी घण्टी है।

चूहा-1
काम हमारा बन जाएगा
जान हमारी बच जाएगी।

चूहा-2
(चूहा-3 से)
जाओ ये घण्टी ले जाओ
बिल्ली के दरवाज़े जाओ।
गले में उसके घण्टी डालो।

चूहा-3
मैं जाऊँ? मैं जाऊँ? मैं जाऊँ?

चूहा-1
हाँ तुम जाओ, तुम जाओ।

चूहा-3
बिल्ली मुझे खा जाएगी।

चूहा-1
(चूहे-4 से)
तुम सब से मोटे चूहे हो
तुम जाओ, करो ये काम।

चूहा-4
मोटा हूँ पर चूहा हूँ
बिल्ली चूहे खाती है।
मोटे चूहे पसन्द हैं उसको
मुझको पूरा खा जाएगी
दुबला-पतला चूहा जाए
उसे बिल्ली न सताये कहो।

चूहा-3
(चूहा-2 को पकड़कर)
सबसे दुबला चूहा ये है
ये जाएगा घण्टी लेकर।

चूहा-2
मैं? मैं? मैं?
दुबला, पतला मैं?
छोटा, ठिगना मैं?
मैं? मैं? मैं?
मुझे झपट मारेगी
बिना चबाए गटकेगी।

चूहा-4
चलो सभी मिलकर चलते हैं।

चूहा-3
देखो, हम सब चूहे हैं
हम बिल्ली के पास गए तो
सबको चट कर जाएगी।

चूहा-1
फिर क्या करें मेरी बहन?

चूहा-2
क्या रास्ते सब बन्द हैं?

चूहा-4
नहीं, नहीं ये मत सोचो मेरे भाई
रस्ता एक नहीं होता मेरे भाई
रस्ते कई होते हैं मेरे भाई
रस्ते कभी बने होते हैं मेरे भाई
रस्ते कहीं बनाते हैं मेरे भाई
रस्ता कोई बनाना होगा।

चूहा-3
आओ इधर सब
कान लाओ इधर सब
ध्यान से सुनो सब
बात पक्की है सुना

(चूहा-3 सबके कान में कुछ कहता है सब खुश हो जाते हैं। मंच पर अँधेरा। मंच पर प्रकाश आता है। बिल्ला अपने आसन पर बैठा है।)

बिल्ला
घर क्या है ये स्वर्ग है पूरा
चूहे खाता हूँ दस-बीस
फिर पानी जम कर पीता हूँ
गद्दे पर पड़कर सोता हूँ,
घर क्या है ये स्वर्ग है पूरा।

(कई चूहे अन्दर आते हैं। एक के हाथ में फूलों की माला है। बिल्ला उन्हें देखकर गुर्राता है।)

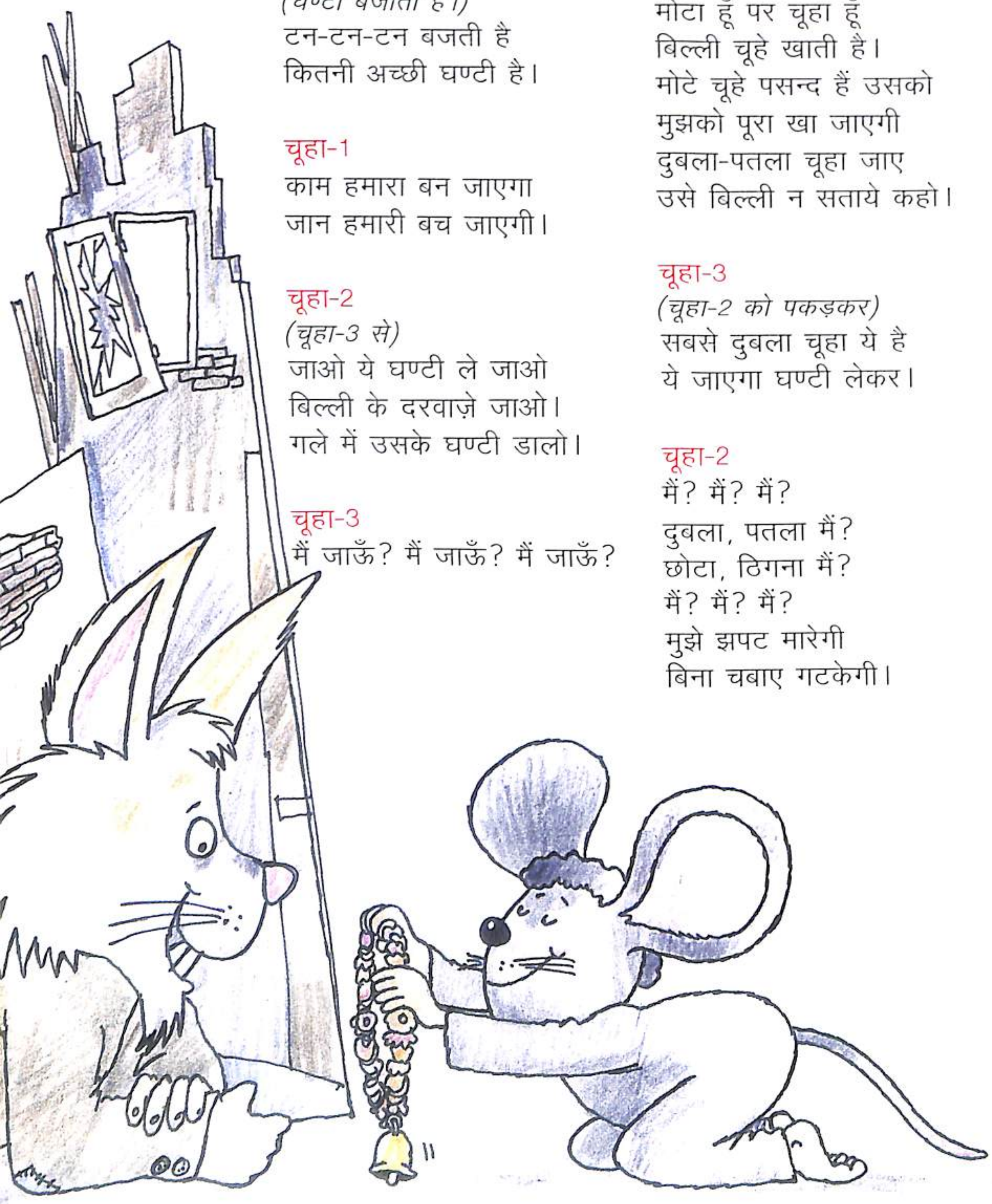

चूहा-1
आप हमारे हैं महाराज
आप हमारे हैं सरताज।

चूहा-2
तुम राजा हो
हम प्रजा हैं।

चूहा-3
जय हो, जय हो, जय महाराज।

चूहा-1
हमने ये सोचा महराज
हमें पकड़ने के चक्कर में
आप लगाते हैं चक्कर।
हमने ये सोचा महराज
रोज़ सबेरे दस चूहे
आपकी सेवा में आएँगे।
आपकी भूख बुझाएँगे।

बिल्ला
बहुत ठीक सोचा है तुमने
अब मैं मोटा बहुत हुआ हूँ।
चूहों का पीछा करने से
अच्छा है जो तुमने कहा है
रोज़ सवेरे दस चूहे?

चूहा-2, चूहा-3
हाँ महराज, हाँ महराज

चूहा-1
आप हमारे राजा हैं।
आपकी जय होए महराज।

चूहा-2
हम जयमाला लाए हैं।
(फूलों की माला दिखाता है।)

बिल्ला
इतने अच्छे-अच्छे फूल
कहाँ से लाए हो ये फूल।

चूहा-3
आपके गले में हम महराज
जयमाला डालेंगे महराज
उसके बाद रोज़ सवेरे...

(सब चूहे कोरस में।)
रोज़ सबेरे दस चूहे
दस चूहे हाँ दस चूहे
मोटे चूहे, तगड़े चूहे
अच्छे चूहे, पक्के चूहे
आपकी सेवा में होंगे।
रोज़ सवेरे दस चूहे।

बिल्ला
(अपनी गर्दन झुका लेता है।)
डालो जल्दी जयमाला
बड़ी भली है जयमाला।
सुन्दर है ये जयमाला।

(चूहे बिल्ले के गले में जयमाला डाल देते हैं और तेज़ी से दूर हट जाते हैं। बिल्ला कुछ समझ नहीं पाता है।)

बिल्ला
जाओ अब दस चूहे लाओ
मोटे, तगड़े चूहे लाओ
साथ गरम मसाला लाओ
मिर्ची, चटनी, धनिया लाओ
तेल नहीं, असली घी लाओ
किचन में जाकर गैस जलाओ
उस पर मैं चूहे तलूँगा...

चूहा-1
महराज गर्दन तो हिलाओ।

(बिल्ला गर्दन हिलाता है तो घण्टी बजती है चूहे हँसते हैं।)

बिल्ला
ये कैसी जयमाला?

चूहा-2
यही तो असली जयमाला है
घण्टी है जयमाला है
खतरे की जयमाला है।

चूहा-3
अब जब भी तुम हिलो-डिलोगे
चलो, फिरोगे दौड़ोगे
घण्टी बाजेगी टन-टन-टन-टन-टन

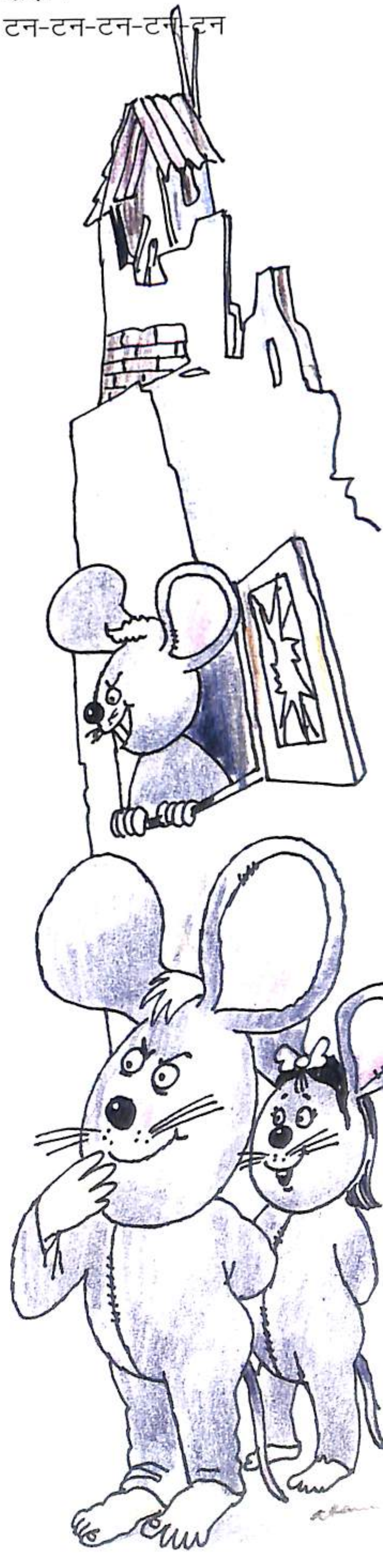

चूहा-4
घण्टी की आवाज़ को सुनकर
हम चम्पत हो जाएँगे
बिल में जा छिप जाएँगे।

(बिल्ला उठकर चूहों के पीछे भागता है। घण्टी बजती है चूहे भागते हैं और हँसते हैं। बिल्ला बहुत प्रयास करता है पर किसी चूहे को पकड़ नहीं पाता है। मंच पर अँधेरा होता है फिर प्रकाश आता है।)

(चूहों का समूह गान)

जय हो, जय हो, जय-जय-जय हो
घण्टी की जय हो, बुद्धि की जय हो
सोच की जय हो, समझ की जय हो
ज्ञान की जय हो, अकल की जय हो
घण्टी की जय हो, माला की जय हो
जनता की जय हो, लोगों की जय हो
शब्दों की जय हो, अक्षर की जय हो
आपकी जय हो, हमारी जय हो
न्याय की जय हो, प्रेम की जय हो
दया की जय हो, करूणा की जय हो
जय हो, जय हो, जय-जय जय हो
घण्टी की जय हो,
बुद्धि की जय हो

(प्रकाश धीमा पड़ता है। नृत्य करते बच्चे शहर निकल जाते हैं।)

मैना

एक लोककथा

गोविन्द शर्मा

एक जंगल में दो मैना रहती थीं। एक दिन एक गड़रिए ने एक मैना को पकड़ा और उसे पिंजरे में बन्द कर दिया। पिंजरे वाली मैना बैठी-बैठी रोज़ाना रोती रहती, जबकि दूसरी मैना हमेशा अपनी बहन को गड़रिए के पिंजरे से बाहर निकालने की तरकीब सोचा करती। एक दिन पिंजरे की मैना को उदास देख गडरिया बोला, "तुम उदास क्यों हो?"

मैना बोली, "आज मुझे अपनी बहन की याद आ रही है। तुम उसके समाचार तो ले आओ। बेचारी क्या पता कैसी है अब।"

गड़रिया बोला, "वह अगर मिल जाए तो क्या कहूँ उससे?" "नहीं, कुछ नहीं कहना। अगर मिल जाए तो बस राज़ी-खुशी का कह देना।" मैना ने कहा।

गड़रिया काफी देर तक मैना को ढूँढता रहा। अचानक उसकी नज़र पेड़ की डाल पर बैठी मैना पर पड़ी तो वह बोला, "मैना, तुम्हारी बहन ने राज़ी-खुशी का समाचार दिया है। तुम कैसी हो?"

आज़ाद मैना उसकी बात सुनकर पहले तो कुछ सोचती रही। फिर बोली, "मेरी तबियत आज खराब है। लगता है जल्दी ही मरने वाली हूँ।" इतना कहकर वह पेड़ की डाल से नीचे गिर पड़ी।

गड़रिए को बड़ा दुख हुआ। उसने उसे उठाया और एक झाड़ी में फेंक दिया। झाड़ी में फेंकते ही वह फुर्र से उड़ गई।

गड़रिए को बड़ा अचम्भा हुआ। घर पहुँचकर उसने मैना को सारी बातें सुना दीं। अगले दिन उसने देखा पिंजरे में मैना मरी हुई थी। दुखी मन से उसने पिंजरा खोला और मैना को निकालकर बाहर झाड़ी में फेंकने चला गया।

गड़रिए ने उसे ज्यों ही झाड़ी में फेंका वह फुर्र से उड़ गई।

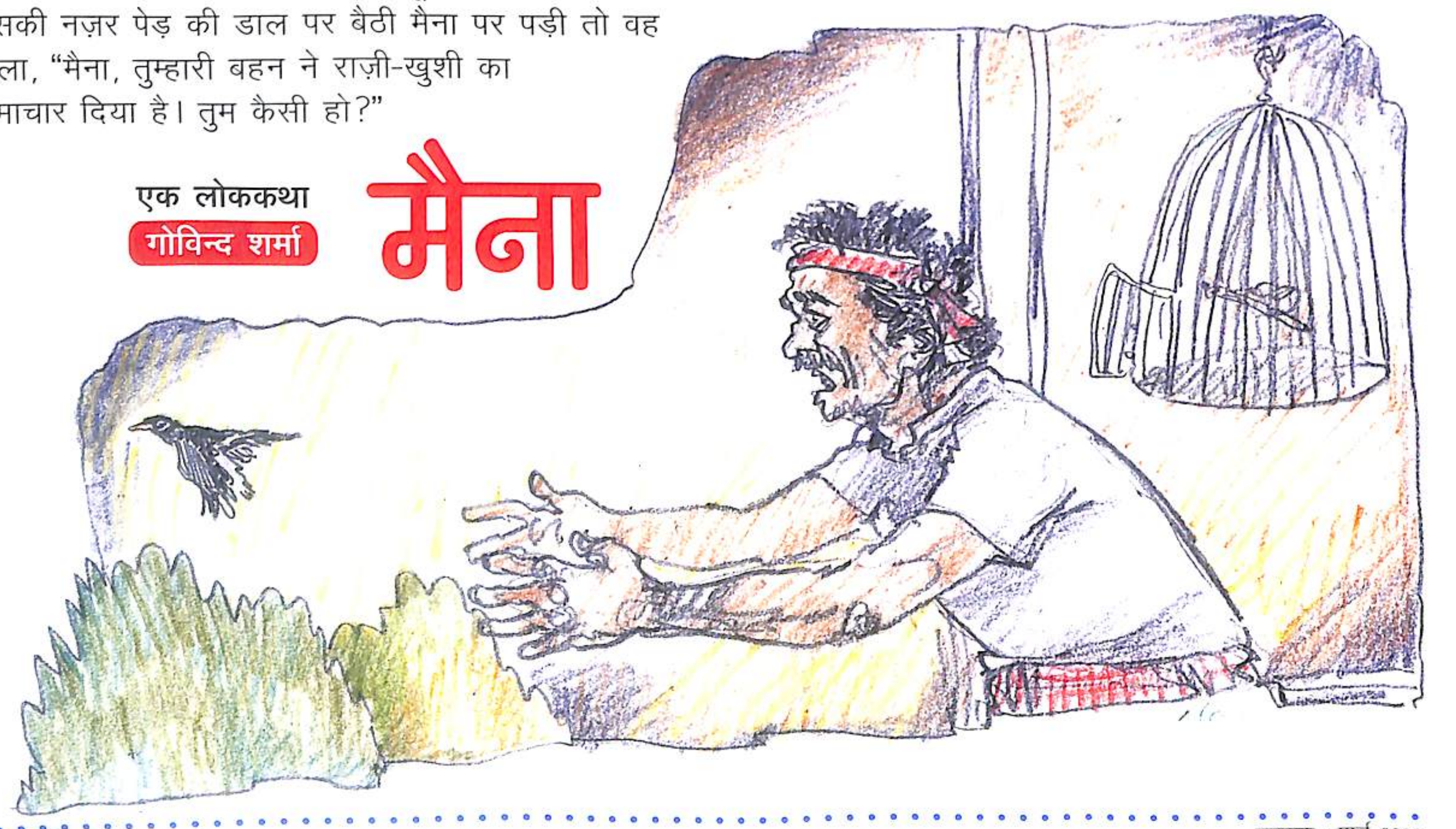

चित्र पहेली

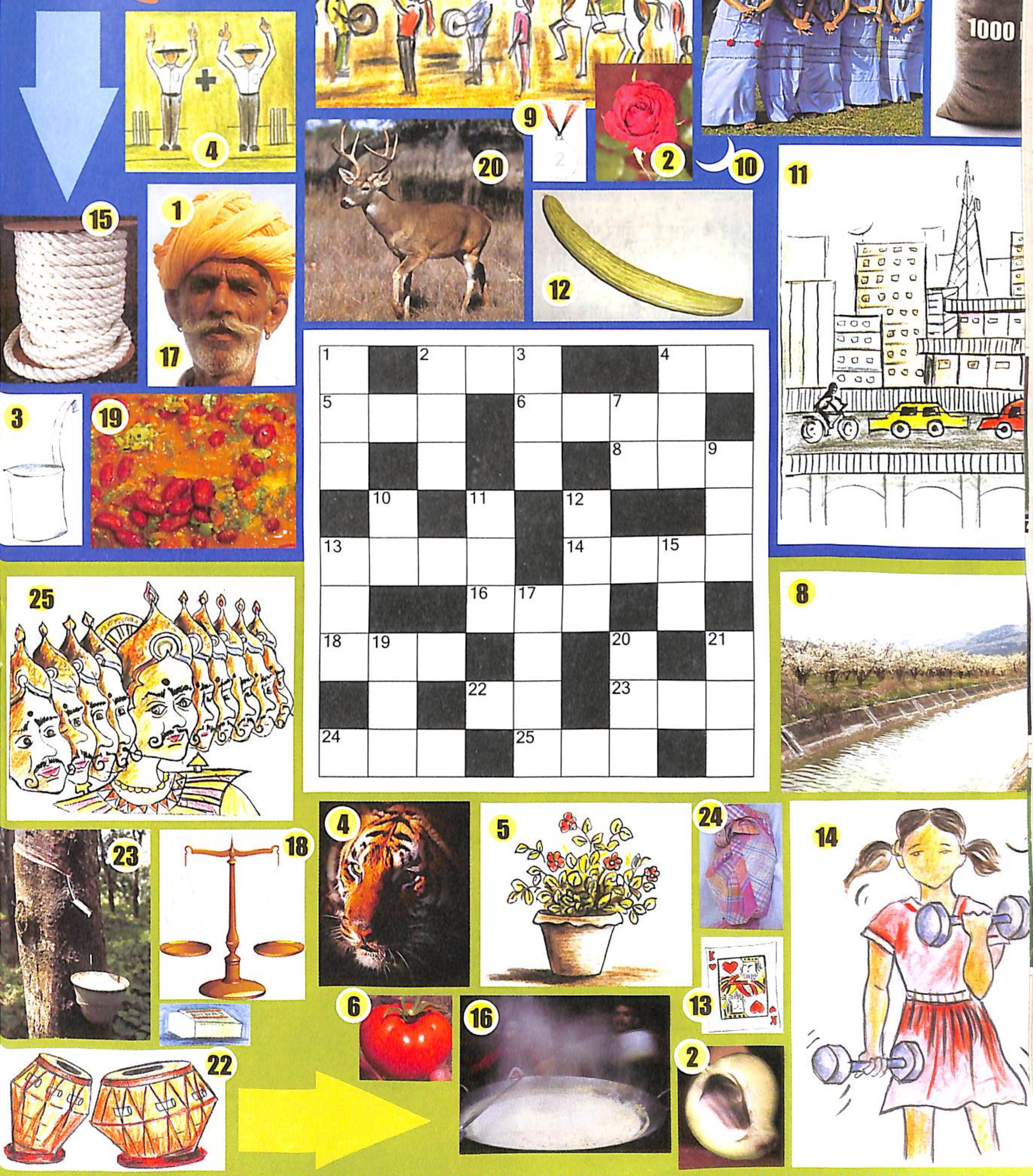

दिलीप चिंचालकर

बसन्त के मेले में पांगर (कोरल), ततैया और छोटा बसन्ता

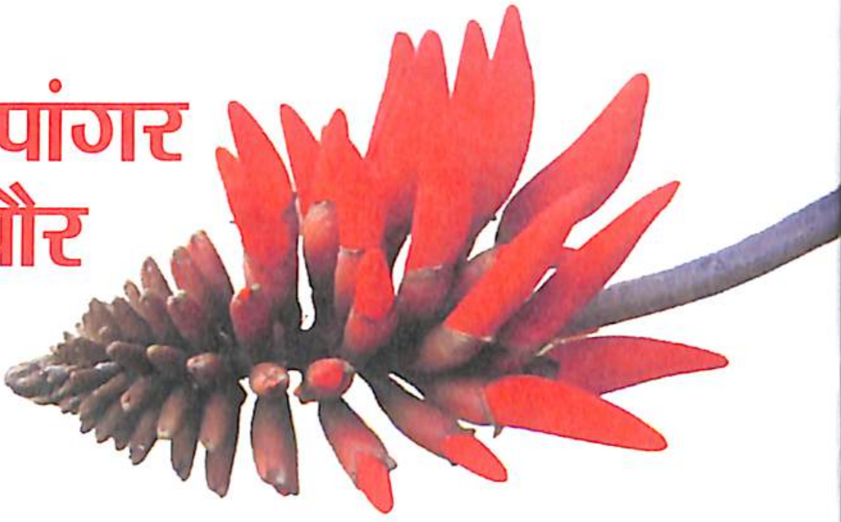

प्रकृति का रोड-शो जो साल भर चलता है, फिर से शुरू हो चुका है। इसके तीन अंग होते हैं – गर्मी, बरसात और सर्दी। कहीं-कहीं अभी पतझड़ खत्म नहीं हुआ है। पिछले साल का आखिरी अंग सिमट रहा है। फिर भी ज़्यादातर जंगल, बाग-बगीचों में वसन्त की सरगर्मी शुरू हो चुकी है। वैसे भारत में बसन्त कम और गर्मी ही ज़्यादा होती है। जब छोटा बसन्ता (कॉपरस्मिथ) बर्तन पर टीचे (कुक-कुक) लगाने लगे, मान लेना चाहिए कि खुशनुमा मौसम आ गया है। जिस दिन मौसम साफ हो और हवा में गर्माहट हो, यह पक्षी पत्तों की आड़ में छुपा पनचक्की की तरह कुक-कुक-कुक करने लगता है।

छोटा बसन्ता

एक बुलबुल को छोड़ दें तो लगता है कि सुरीला गाने वाले शायद सारे पक्षी शर्मीले होते हैं। कोयल जाने क्यों छिपकर ही इतना मीठा गाती है? पीलक या ओरिओल इतना ज़र्द पीला होता है मानो आज ही हल्दी लगी हो उसे। पीपल के लहलहाते पत्तों के पीछे छुपकर गाना उसका स्वभाव है। लेकिन छोटा बसन्ता तो इतना रंगीन और बनाठना रहता है कि दिख जाए तो नज़र ही लग जाए।

इन दिनों लग रहे प्रकृति के मेले में पलाश और पांगर (कहीं-कहीं पर इसे गधा पलाश भी कहा जाता है) की दुकानें सबसे ज़्यादा आकर्षक हैं। पलाश तो शहर में कम ही दिखाई देता है परन्तु पांगर की रौनक कुछ ऐसी है कि राह चलते इंसान भी पेड़ के नीचे बिछी सुर्ख लाल पंखुड़ियाँ देखकर ठिठक जाएँ। पेड़ पर पत्ता एक नहीं। हर फुनगी पर पाँच डंडियों वाले एंटिना निकल आए हैं जिन पर लाल फूलों की आतिशबाज़ी हो रही है। भौंरे, मधुमक्खियाँ, शकरखोरा आ-आकर फूलों का रस पी रहे हैं। मैना, तोते, फुदकी और कई प्रकार के पक्षी टहनियों पर शोर मचा रहे हैं। वैलेंटाइन

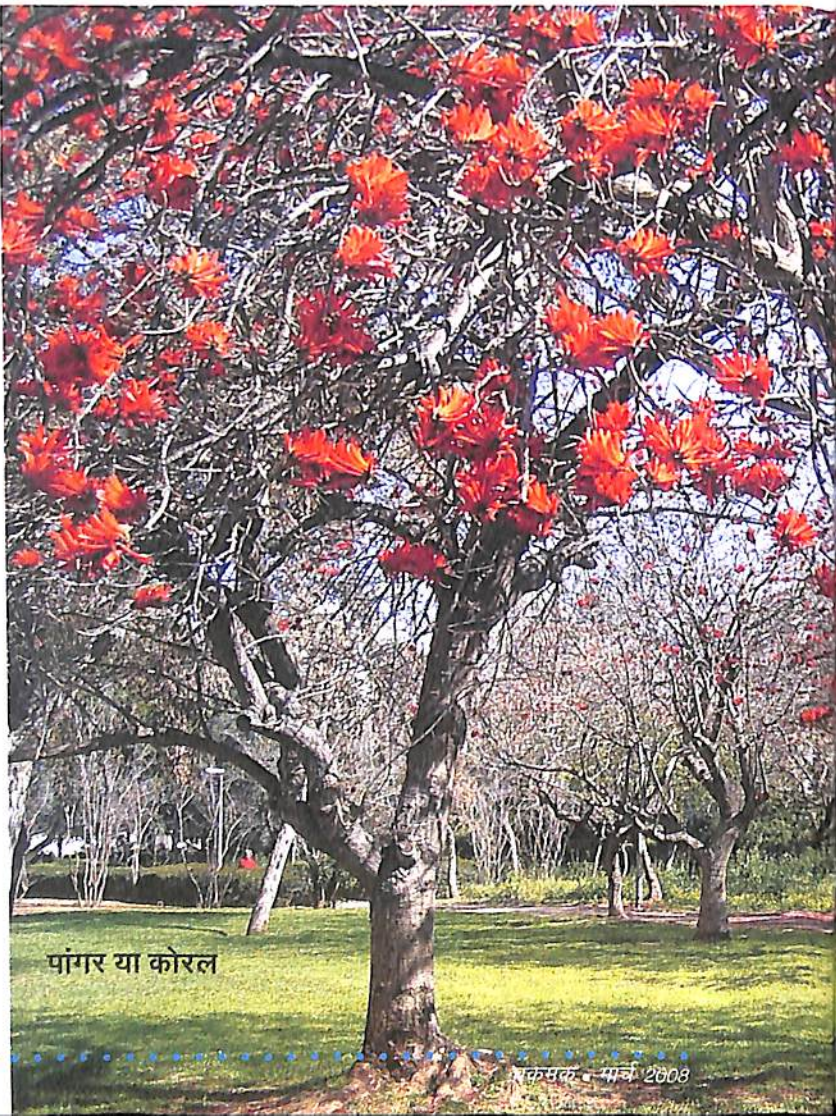
पांगर या कोरल

हमिंगबर्ड

दिवस पर किसी कॉफी हाउस में क्या चहल-पहल होगी जितनी अभी पांगर पर है।

चमकदार नीले रंग का शकरखोरा दिखता हमिंगबर्ड जैसा है परन्तु है नहीं। हमिंगबर्ड सिर्फ उत्तर और दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के दो छात्र क्रिस्टोफर क्लार्क और टेरेसा फो दूरबीन लेकर एना के हमिंगबर्ड के पीछे पड़े थे। उनका ध्यान एक अजूबी बात पर गया। और वह यह कि हमिंगबर्ड के चहकने की आवाज़ अपने पंखों से निकालता है। इस मौसम में अपनी सखी को रिझाने के लिए यह हवा में कलाबाज़ियाँ दिखाता है। पहले तो आकाश में ऊँचाई पर जाता है फिर 50 मील प्रति घंटा की रफ्तार से नीचे की ओर छलाँग लगाता है। हवा झनझनाते हुए उसकी दुम के पंखों में से होकर गुज़रती है और पपैया-सी बजने लगती है।

खिड़की से झाँककर बाहर बगीचे में देखो। पेड़-पौधे, पक्षी और कीट-पतंगे कुछ न कुछ कारगुज़ारी में लगे दिखाई देंगे। हो सकता है कि तुम्हारी खिड़की के छज्जे में ततैया छत्ता बना रही हो। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला के कमरे के बाहर भी ततैयों का छत्ता था। कई बार वे उन्हें काट भी चुकी थीं। मंडेला कहते हैं कि इन प्राणियों का भी पृथ्वी पर उतना ही हक है जितना हमारा है। जब हमारा व्यवहार उन्हें समझ में नहीं आता वे हमें काट लेती हैं। हम तो समझदार हैं ना इसलिए उन्हें तंग न करें। अब इतनी-सी समझदारी दिखाने के लिए क्या हमें राष्ट्रपति बनने की ज़रूरत है?

कहावतों की कहानियाँ

मुर्गे की एक ही टाँग होती है

जब कोई सरासर झूठ बोलकर उसे सही साबित करने की कोशिश करे।

कोई बावर्ची अपने मालिक के लिए खाना पकाकर लाया। उसमें मुर्गे की एक ही टाँग थी। एक टाँग बावर्ची ने चुपचाप खा ली थी। मालिक ने पूछा, "इसकी दूसरी टाँग कहाँ गई?" बावर्ची ने जवाब दिया, "हुजूर! मुर्गे की सिर्फ एक ही टाँग होती है।" संयोगवश किसी दिन एक मुर्गा कूड़े के ढेर पर एक टाँग से खड़ा था। बावर्ची ने मुर्गे की ओर इशारा करके कहा, "हुजूर! एक टाँग के मुर्गे को देखिए।" जब मालिक ने ताली बजाई, तो मुर्गे ने झट दूसरा पैर ज़मीन पर रख दिया और बावर्ची से कहा, "देख, इसके दोनों पैर हैं कि एक?" इस पर उसने जवाब दिया, "हुजूर! ताली बजाने से दो पैर दिख पड़े। अगर उस समय भी आपने ऐसा किया होता, तो दूसरा पैर ज़रूर सामने आ जाता।"

मैं कैसा बच्चा हूँ?

मैं खेलता हूँ अपने सपने के दोस्त के साथ
मज़ाक करता हूँ
मैं बच्चों को मारता हूँ
मैं किसी से नहीं डरता हूँ,
मैं पेड़ पर झूलता हूँ
मैं गन्दा बच्चा हूँ।

मैं कहानी बनाता हूँ
मैं पेड़ उगाता हूँ
मैं मस्ती करता हूँ
मैं बाज़ार नहीं जाता
मैं माँ से कितनी बार कहता हूँ, साइकिल लाने को
पर वो नहीं लाती
मैं रूठा हुआ बच्चा हूँ।

मैं गन्दे कपड़े पहनता हूँ
मैं पढ़ता नहीं हूँ
मैं दरवाज़े पर झूलता हूँ
मैं कुत्ते से डरता हूँ
मैं झाड़ू नहीं लगाता
मैं घमण्डी हूँ
मुझे ब्रिजेश डाँटता है
मुझे माँ मारती है
मुझे लड़कियाँ चिढ़ाती हैं
मुझे मारना आता है
मुझे मारना नहीं आता है
मुझे पर छिपना आता है।

मैं रेत पर खेलता हूँ
मैं चित्र बनाता हूँ
मैं रोता हूँ
मैं बादल को देखता हूँ
मैं गाना गाता हूँ
गीता पढ़ती है, तो मैं देखता हूँ।

बिट्टू, दस वर्ष, भोपाल

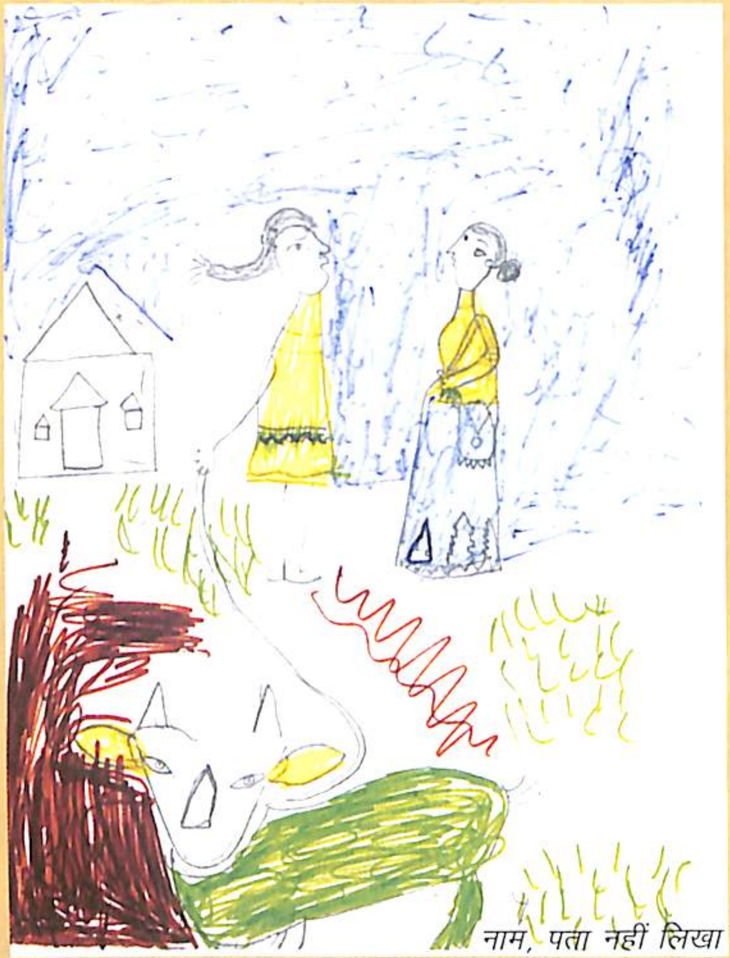

नाम, पता नहीं लिखा

नाम नहीं लिखा, भोपाल

मेरा पन्ना

हिमांगी, सात वर्ष, लखनऊ, उ. प्र.

चूज़े की यात्रा

एक चूज़ा था। वह तारों से भरे आकाश को देखता रहता था। वह सोचता, "काश! मैं चिड़िया होता। हवा में उड़ सकता। बादलों से बातें करता। चाँद को छूकर आता।"

एक दिन की बात है। एक रॉकेट उसके पास आया। रॉकेट ने चूज़े से कहा, "चलो मेरे साथ।" रॉकेट ने चूज़े को अपनी पीठ पर बिठाया। दोनों आकाश में उड़ चले। चलते-चलते उन्हें रात हो गई। रॉकेट बोला, "सूरज सोने चला गया है।"

अब दोनों चाँद से मिलने चल पड़े। रॉकेट बोला, "अरे! सुबह हो गई। चाँद सोने चला गया।" सूरज पूरब से निकल चुका था। अब वह तारों से मिलने चल पड़े। तारे सूरज से भी दूर थे। रॉकेट बोला, "मैं तो थक गया हूँ।" "मैं भी।" चूज़े ने कहा।

दोनों लौट आए। सूरज तब तक पश्चिम दिशा की ओर जाकर छिप गया था। शाम होते ही तारे आकाश में टिमटिमाने लगे थे। चमकीले तारों को देखकर चूज़ा खुश हो गया। उन्हें देखकर वह अपनी थकान भी भूल गया।

मनोहर चमोली "मनु", अलमोड़ा, उत्तरांचल

शुभम, छठी, भोपाल

अशोक पिपलोदे, जगह का नाम नहीं लिखा

हमने बनाई ईंट

हम लोगों ने तालाब से चिकनी मिट्टी ली और माचिस की खाली डिब्बी ली। हम लोग मिट्टी को साने फिर माचिस के डिब्बी में भरकर चारों तरफ से बराबर किए। उसके बाद उसे खोलकर मिट्टी की बनी ईंट को बाहर निकाले और सींक से नाम लिखे। फिर धूप में सुखाए हमारी छोटी-छोटी ईंट तैयार हो गई। हमारी कक्षा में तीनों ग्रुप ने ईंट बनाए।

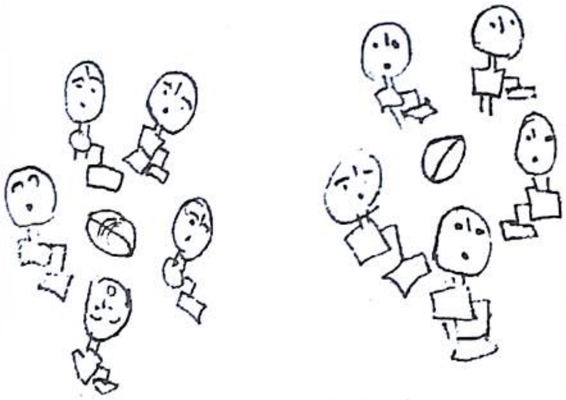
अब्दुल्ला, तीसरी, फैज़ाबाद, उ. प्र.

प्रिया यादव, जगह का नाम नहीं लिखा

इशान अग्रवाल, पहली, भोपाल

सोमा का गाना

एक तारा ऊपर से धरती पे आया है,
एक तारा ऊपर से धरती पे आया है,
अभी तो वो है फरिश्ता,
कल तो होगा हमारी आँखों का तारा,
अब तो फिक्र है उसकी शरारतों की,
जब वो बड़ा होगा तो क्या होगा।
हो हो हो हो ही ही हो हो हो हो।

प्रत्यक्षा श्रीवास्तव (सोमा), आठ वर्ष, भोपाल

देखो-देखो बड़ा अजूबा! मेंढक है या घोड़ा डूबा?

नीचे कुछ रंगों के नाम लिखे हैं। हर रंग को एक अलग रंग से लिखा गया है। क्या तुम इन पंक्तियों को जल्दी-जल्दी उनके रंगों के हिसाब से पढ़ सकते हो? जैसे पहली लाइन को पढ़ेंगे – हरा लाल नीला। जल्दी-जल्दी पढ़ना कठिन है? ऐसा क्यों?

पीला नीला नारंगी
काला लाल हरा
बैंगनी पीला लाल
नारंगी हरा काला
नीला लाल बैंगनी
हरा नीला नारंगी
हरा काला लाल

कौन पहले आया?

इन तीन वाक्यों में से दो गलत हैं।

1. चूज़ा पहले अस्तित्व में आया था।
2. अण्डा पहले अस्तित्व में आया था।
3. पहला वाक्य गलत है और दूसरा वाक्य सही है।

तो क्या सम्भावना है कि अण्डा पहले अस्तित्व में आया था?

कौन पहले आया?
अण्डा पहले अस्तित्व में आया था इसकी सम्भावना शून्य है। तीसरा वाक्य ही गलत हो सकता है क्योंकि पहले और दूसरे वाक्य दोनों, गलत नहीं हो सकते हैं। जब तीसरा वाक्य गलत है तो दूसरा भी गलत होगा।

उलझन

चोरी बुरी या ठगी?

हरीदास और मणीराम दो भाई हैं। किसी मुश्किल में फँसकर वे शहर छोड़ने को मजबूर हो गए। मगर उनके पास एक फूटी कौड़ी नहीं थी। तो हरीदास ने एक हार्डवेयर स्टोर का ताला तोड़कर पाँच हज़ार रुपए चुरा लिए। उधर मणीराम हवलदार रघु के पास जा पहुँचा। हवलदार एक सेवानिवृत्त फौजी है। आमदनी के नाम पर उसे पेंशन मिलती है, बस। मगर वह ज़रूरतमन्द लोगों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता है। मणीराम ने उसे बताया कि पिताजी के ऑपरेशन के लिए उसे फौरन पाँच हज़ार रुपए की ज़रूरत है और वह यह पैसा जल्दी ही लौटा देगा। न तो मणीराम के पिता को वास्तव में कुछ हुआ था, न ही उसकी पैसा लौटाने की नीयत थी। हवलदार तो मणीराम को ठीक तरह से पहचानता भी नहीं था मगर फिर भी उसने पैसे उधार देने में आनाकानी नहीं की। पैसा लेकर दोनों भाई शहर से चम्पत हो गए।

तो ज़्यादा बुरी बात कौन-सी है? हरीदास की चोरी या मणीराम की ठगी? क्यों?

विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (IV)

बस्ती में जहाँ से जंगल शुरू होता वहाँ छोटा-सा माता का देवालय था। मन्दिर बहुत पुराना नहीं था। मूर्ति बहुत पुरानी थी। मन्दिर से सटा हुआ एक छोटा-सा सुन्दर सरोवर था। सरोवर मूर्ति के काल का लगता था। सरोवर के चारों ओर पानी तक पहुँचने के लिए पत्थर की सीढ़ियाँ थीं। गर्मियों में यहाँ शेर, हिरण, जंगली भैंस, नीलगाय आदि पानी पीने आते थे। सरोवर में बड़े-बड़े कछुए और मछलियाँ भी थीं। शेर जब पानी पीता तो उसकी नज़र मोटी-मोटी मछलियों पर भी होती कि झपट्टा मारकर मुँह में दबोच ले। भूखा शेर थककर जब ज़मीन पर लोटता होगा तब आकाश की ओर अपने चारों पैर उठाए उसकी दृष्टि आकाश पर उड़ते पक्षी पर ऐसे पड़ती होगी कि उड़कर पक्षी को दबोच ले। पंख वाले सिंह की कल्पना में शायद यह भी एक कारण हो। माता के देवालय के पास एक अखाड़ा था। वहाँ कुश्ती लड़ने का खेल होता। एक भारी गोल पत्थर भी था। उसको उठा लेने का भी खेल होता। भैरा इस पत्थर को उठा लेता था। भैरा पत्थर तो उठा लेता पर बाद में खुद उठ नहीं पाता था। उसको उठाना पड़ता। पत्थर उठाने का अभ्यास उसे बिच्छू ढूँढ़ने के कारण पड़ा। रास्ता चलते वह पत्थर उठा लेता कि इसके नीचे बिच्छू होगा। पर उसे बिच्छू कभी मिलता नहीं। और निराश होकर वह पत्थर को दूर फेंक देता।

बौने पहाड़ पर एक दिन बोलू ने एक गोल पत्थर को उठाया और चट्टान पर पटका तो पत्थर के दो टुकड़े हो गए थे। जैसे नारियल के बराबर-बराबर दो टुकड़े हो जाते हैं। बोलू ने देखा था कि पत्थर के दोनों टुकड़ों में नीले रंग के स्फटिक चमक रहे थे। ऐसे ही दो-एक पत्थरों को और तोड़कर देखा पर उसमें स्फटिक नहीं थे। स्फटिक वाले पत्थरों को उसने एक चट्टान के नीचे औंधा कर रख दिया जिससे स्फटिक छुप जाएँ। किसी को न दिखें। यह बात मित्रों को बताना वह भूल गया था।

मंगलवार का दिन था। कक्षा में आते ही गुरूजी ने कहा, "आज की पढ़ाई है कि आज स्कूल में कोई पढ़ाई नहीं होगी। और इस पढ़ाई का विषय है– छुट्टी का दिन। तुम लोगों को अच्छे से छुट्टी का दिन बिताना चाहिए। छुट्टी का दिन तुम लोगों ने कैसे बिताया यह मुझे कल बताना। छुट्टी के दिन की पढ़ाई रात तक चलेगी। जब तक तुम सो नहीं जाते। छुट्टी का दिन अकेले मनाना चाहते हो तो अकेले मनाना, या जिनके साथ मनाना हो तो उनके साथ मनाना। एक साथ जैसे कक्षा में पढ़ाई का दिन होता है वैसे ही एक-साथ भी बिता सकते हो। अपने घर में या किसी के घर में या घर से बाहर इस उपयोगी दिन का उपयोग करोगे। परन्तु घर सही समय पर पहुँच जाना।"

"गुरूजी आप हमारे साथ रहेंगे?" एक-साथ बहुत से बच्चों ने पूछा।

"मैं किसी के साथ नहीं रहूँगा। मैं स्कूल में रहकर सभी गुरूजी के साथ परीक्षा की तैयारी करूँगा। छुट्टी के दिन की भी परीक्षा होगी।"

"मैं सरोवर जाकर मछलियों को गिनूँगा।" बीनू ने कहा। पर पानी में तैरती मछलियों को गिनना कठिन काम था। "माता देवालय में हम लोग छुआछुआईल खेलेंगे।" तीन चार बच्चों ने कहा। इनमें कूना और बोलू भी शामिल थे। बोलू और कूना दोनों दो आलों में बैठे थे। कूना चिल्लाई थी, बोलू हाथ उठाकर शामिल था।

"बोलू तुमने कुछ कहा?" गुरूजी ने पूछा।

"मैं छुआछुआईल खेलूँगा।" बोलू भूल गया था कि वह आले में है। और यह कहकर आले से उतरकर हवा में चार कदम चल चुका है। बोलते ही वह दाहिने हाथ से खूँटी पकड़े लटक गया था और उसने हवा में चार कदम चलाए थे। बोलू ने हवा में कदम चलाए थे इस पर किसी का ध्यान नहीं गया था, गुरूजी का भी नहीं। कूना को याद था। जब बोलू के गिरने का डर होता था, वह पहले से बोलू को सावधान कर देती थी। आज वह बोलू की कक्षा में आ गई थी। वह कलम लाना भूल गई थी। होता यह था कि कूना की कलम पता नहीं कैसे बोलू के बस्ते में चली जाती थी और बोलू की कूना के बस्ते में। कूना और बोलू यह जानबूझकर नहीं करते थे। हो सकता है यह अदल-बदल कलम, पेंसिलें जानबूझकर करती हों। सभी कलम एक जैसी होती थीं। कलमें एक-दूसरे को पहचानती होंगी। बोलू, कूना अपनी-अपनी कलमें उतना न पहचानते हों। कूना बोलू से कलम लेना चाहती थी।

छुआछुआइल का खेल लड़के खेल रहे थे। कूना भी थी। बोलू चुपचाप अखाड़े की रेत पर जाकर खड़ा हो गया था। और कहीं खो गया था। भैरा

तेज़ भाग नहीं पाता था। दाम कूना को देना था। वह जानती थी कि वह भैरा को छू लेगी। वह भैरा को छूने को थी कि भैरा कूना से बचकर भागते हुए बोलू की तरफ भागा। रेत पर भागते हुए वह लड़खड़ा गया और भारी-भरकम भैरा बोलू से जाकर ज़ोर से टकरा गया। टकराकर भैरा छिटककर रेत पर गिरा। बोलू तब भी खोया हुआ था। टस से मस भी नहीं हुआ। वह चुपचाप उसी तरह खड़ा था। भैरा को रेत पर गिरने से उतनी चोट नहीं आई थी जितनी चोट बोलू से टकरा जाने से आई थी। कूना और दूसरे लड़कों ने गिरे-पड़े भैरा को उठाया। भैरा रो रहा था। बोलू मौलश्री के घने पेड़ पर बैठे किसी पक्षी की मीठी बोली सुन रहा था। वह खो गया था। पक्षी दिखाई नहीं दे रहा था।

भैरा रोते-रोते बोल रहा था कि बोलू ने जानबूझकर उसे गिराया है। कूना और सब लड़कों ने भैरा से कहा कि वह झूठ बोल रहा है। भैरा बोलू से टकराकर गिरा है। गलती भैरा की है।

"चोट मुझको लगी है। बोलू को तो नहीं लगी है।" भैरा ने फिर रोते हुए कहा।

"चुपकर रोना। रोएगा तो मारूँगी। चल दाम दे।" कूना ने हाथ उठाकर कहा। "फिर से खेल होगा।" भैरा ने कहा। वह चुप हो गया था। भैरा रोनटाई खेल रहा था। वह दाम नहीं देना चाहता था। भदभद दौड़कर वह किसी को छू नहीं सकता था। और कूना जानती थी कि वह भैरा को हर बार दौड़कर पकड़ सकती है। "चलो।" कूना ने कहा। वह फिर से दाम देने को तैयार थी।

भैरा को छोड़ सब बोलू के पास गए। पक्षी उड़ गया था। "तुमको चोट तो नहीं लगी।" कूना ने बोलू से पूछा। "नहीं। भैरा कैसे गिर गया था?" बोलू भैरा के पास गया।

"तुमको मेरे टकराने से कुछ नहीं हुआ?" कराहते हुए भैरा ने पूछा। "नहीं।" बोलू ने कहा। "बोलू तू कुश्ती लड़ेगा?" बोलू का हाथ पकड़कर भैरा ने कहा। "नहीं। कुश्ती लड़ना मुझको नहीं आता।" भैरा से दूर जाकर बोलू ने कहा। डर गया। "नहीं।" बोलू फिर एक कदम पीछे हटा। "मैं भी तुमको गिराऊँगा।" भैरा ने कहा। बोलू का ध्यान एक रंग-बिरंगे कीड़े पर था। उसकी पीठ पर सुनहरी और बैंगनी धारियाँ बनी थीं। बोलू फिर से कहीं खो गया था। बोलू चुपचाप था। तभी भैरा ने झपटकर दोनों हाथों से कसकर बोलू को पकड़ा और पैर से अड़ंगा लगाकर गिराने लगा। बोलू के पैर अंगद की तरह रेत पर गड़े थे। भैरा उसे हिला भी नहीं सका। बोलू का ध्यान तब भी कीड़े पर था। पर कीड़ा शायद भैरा के

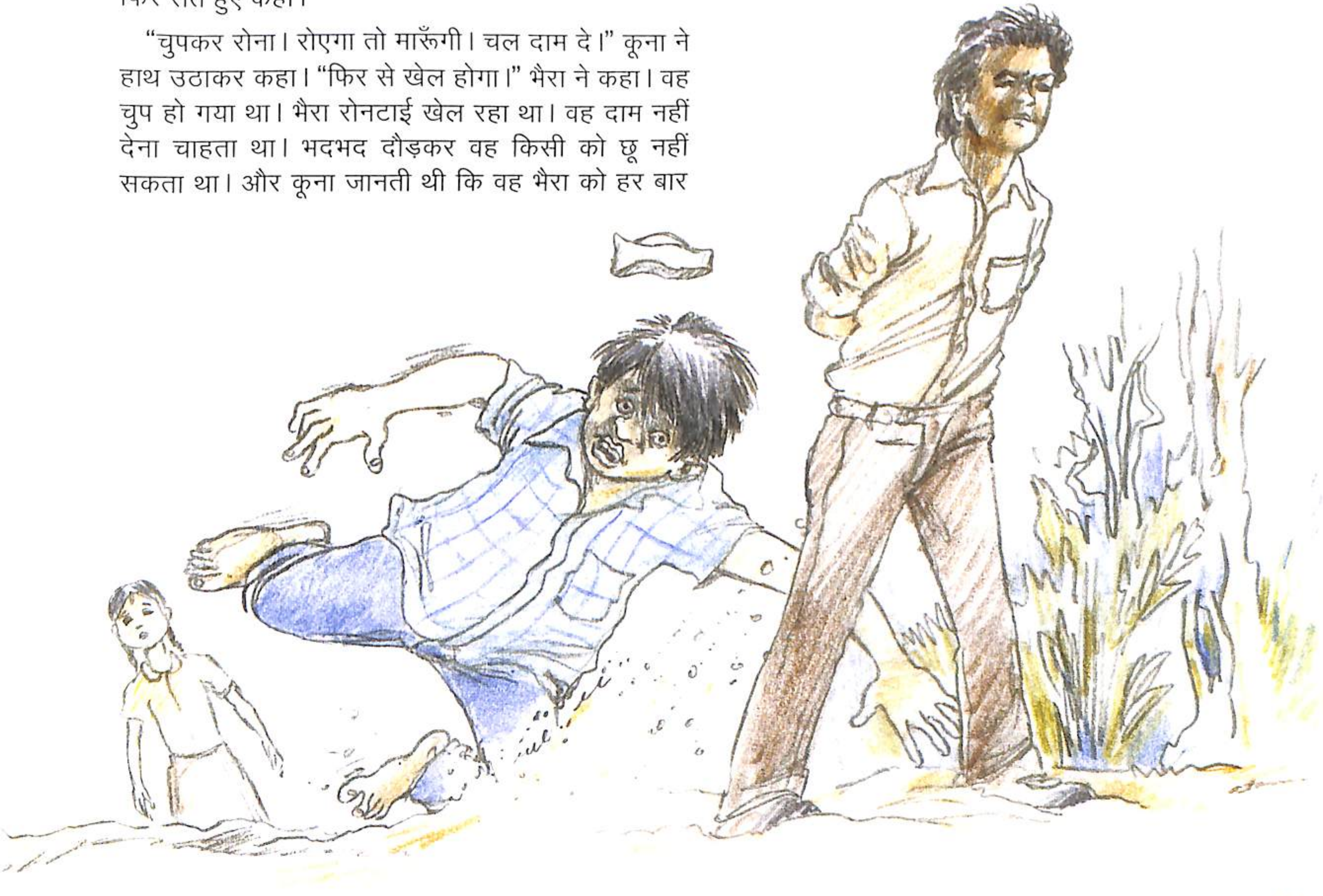

कारण चौंक गया था। वह तेज़ी से एक पत्थर की तरफ भागने लगा था। कूना रोने लगी थी। वह डर गई थी। दूसरे लड़के भी डर गए थे। यह सब की आशा के विपरीत हुआ था। कीड़े की भी आशा के विपरीत।

भैरा बोलू को छोड़कर अलग हो गया। और दूर जाकर खड़ा हो गया। भैरा ने सोचा वह दौड़ता हुआ बोलू को ज़ोर से धक्का देगा। उसे विश्वास नहीं हुआ था कि वह बोलू से टकराकर गिर पड़ा था। कूना बोलू के पास जाकर खड़ी हो गई थी। भैरा बोलू से कुछ दूर और चला गया। वह जंगली भैंस के पड़वे की तरह बोलू की ओर फदर-फदर दौड़ा। वह पसीने से भीगा हुआ था। उसके माथे और गले में रेत चिपकी थी। कूना को समझ में नहीं आया कि भैरा दौड़ा क्यों आ रहा है। "कूना हट जा।" दौड़ते हुए भैरा चिल्लाया। कूना नहीं हटी। "कूना दूर हो जा।" भैरा के टकराने के पहले बोलू ने कहा और कूना के सामने आकर चुपचाप खड़ा हो गया। दौड़ते-दौड़ते भैरा बोलू से टकराया और उसे ज़ोर-से धक्का दिया। भैरा से टकराने के पहले बोलू को सुनहरी और बैंगनी पट्टी वाला कीड़ा दिख गया था। बोलू ने देखा कि कीड़े की सुनहरी पट्टी चमक रही थी। और उसी समय बोलू कहीं खो गया था।

भैरा बोलू से छिटककर रेत से बाहर जा गिरा था। वह ज़ोर से रो रहा था। उसे चोट लगी थी। पर भैरा के टकराने के बाद भी बोलू जस का तस खड़ा था। कीड़ा दिख नहीं रहा था।

बोलू ने भैरा के पास जाकर पूछा, "क्यों रो रहे हो भैरा, तुमको क्या हुआ?" "जैसे तुमको मालूम नहीं!" रोते-रोते भैरा ने कहा। "सच में मुझे कुछ नहीं मालूम।" भैरा को चुप कराते हुए बोलू ने कहा। भैरा की गलती को सबने भुला दिया था। सब भैरा को चुप करा रहे थे। भैरा को अपनी गलती मालूम हो गई थी। रोना बन्दकर वह हँसने लगा था, "तुमको चोट तो नहीं लगी?" चोट से कराहते हुए भैरा ने बोलू से पूछा। नहीं बोलू ने कहा। "चलो घर चलें। मुझको उठाओ।" भैरा ने कहा। सबने ज़ोर लगाकर भैरा को उठने में सहायता की। "छुट्टी का दिन तो अभी बहुत बाकी है।" कूना ने भैरा के कपड़ों में लगी रेत को झरियाते हुए कहा। भैरा की आँखों में अभी भी आँसू थे। सब बस्ती की तरफ चल पड़े।

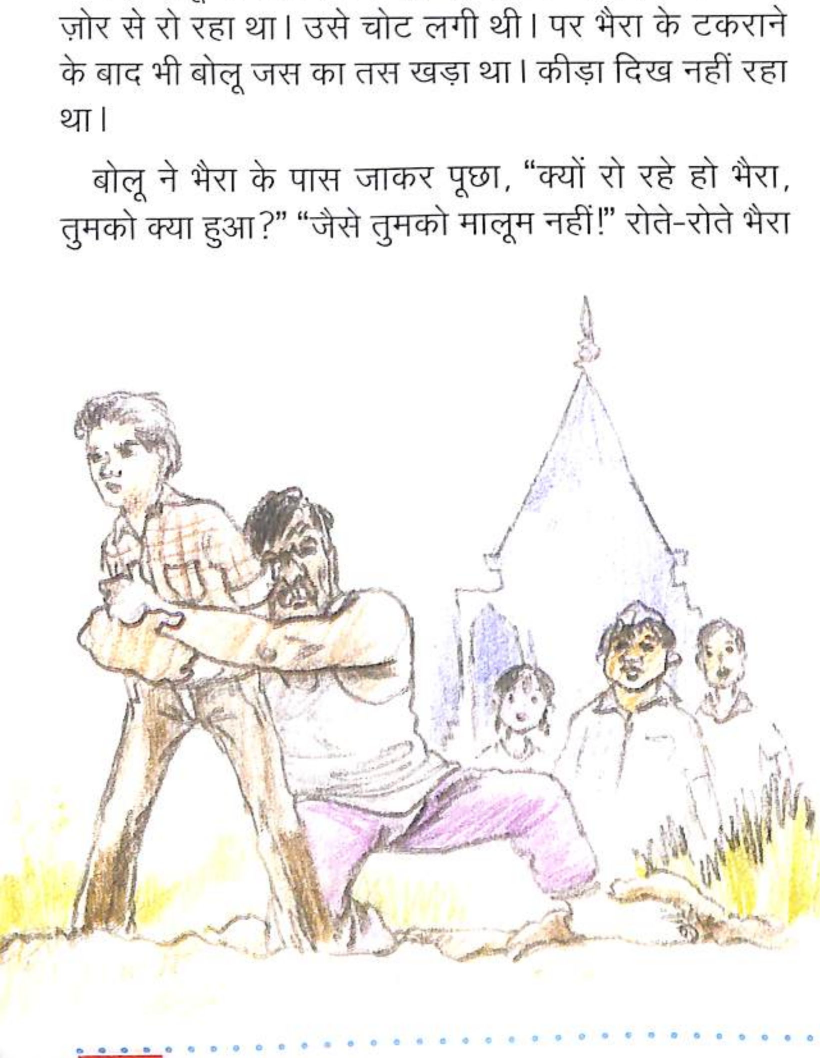

कुछ दूर चले ही थे कि किसी को बोलू की आवाज़ सुनाई नहीं दी। बिना बोले या गुनगुनाते हुए बोलू साथ नहीं हो सकता था। "अरे बोलू!" भैरा ने मुड़कर कहा। सब मुड़े। बोलू अखाड़े की रेत पर खड़ा था और शायद कहीं खो गया था। "चलो बोलू।" सबने पुकारा। बोलू ने सुना नहीं। तभी अखाड़े में शायद व्यायाम के लिए आया एक युवक कूना के पास से निकला। "भय्या बोलू चुपचाप है। चल नहीं पा रहा है। कुछ बोलता नहीं। इसी तरह चुपचाप खड़ा रहेगा तो घर नहीं जा पाएगा।" युवक बस्ती में नया था। बोलू को नहीं जानता था। एक-दो दिन पहले भटककर बस्ती आया था। "बालक को घर पहुँचाना है। मैं पहुँचा दूँगा। साथ चलकर घर बता देना। कल रात को ही यहाँ आया हूँ।" युवक ने कहा। भटककर आया यह भी वह कहना चाहता था। पर यह कहना उसे अनावश्यक लगा।

सब खुश हो गए थे। बोलू पत्थर की तरह खड़ा था। वह नहीं हिल रहा था। उसके बड़े-बड़े बाल हवा में हिल रहे थे। युवक बलिष्ठ और शिष्ट था। उसका पैर व्यायाम के लिए रखे पत्थर से टकराया। उसने दोनों हाथों से पत्थर को सिर से ऊपर उठाकर किनारे फेंक दिया जैसे फुटबाल को उठाकर फेंकते हैं। सब देख रहे थे कि जिस तरह उसने पत्थर को फुटबाल की तरह फेंका था तो पत्थर भी धप्प, धप्प फुटबाल की तरह उछलता हुआ दूर जा गिरा था।

"क्या गुस्सा हो? भूख लगी है? घर चलो।" कहकर उसने बोलू को उठाया। उसने बोलू को उसी तरह उठाने की कोशिश की जैसे सम्हालकर किसी बच्चे को उठाते हैं। और वह चकित हुआ कि बोलू हिला नहीं। उसने थोड़ी ताकत लगाई फिर भी बोलू हिला नहीं। अब सभी लड़के दोनों को घेरे हुए थे। कूना भी थी। अब उसने साँस खींचकर और बल लगाया। फिर पूरा बल लगाया। बोलू के पैर थोड़ा भी नहीं हिले। बोलू रेत पर खड़ा था। पर युवक को भ्रम हुआ कि बोलू के पैर रेत में धँस गए हैं।

जारी...

1 हम अव्वल हैं,
चूंकि हमारे इरादे मज़बूत हैं

ग्रामीण रोज़गार में देश में प्रथम मध्यप्रदेश

इकनामिक एंड पॉलिटिकल वीकली का कथन है

> *"ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना के अमल में पिछड़े समझे जाने वाले राज्यों ने विकसित राज्यों से बेहतर काम किया है, मध्यप्रदेश इसका उदाहरण है। योजना के अमल को लेकर आलोचना आसान है। हालांकि यह भी देखना है कि अब तक इस योजना ने हासिल क्या किया है और भविष्य की क्या संभावनाएं हैं।"*

हम अपने प्रदेश के सबसे पीछे खड़े व्यक्ति को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा देने को कृत संकल्पित हैं। रोज़गार गारंटी योजना का ईमानदार क्रियान्वयन हमारे लिए प्रदेश के वंचित वर्ग को विकास से जोड़ने का उपक्रम है।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

भारत सरकार द्वारा हाल में जारी रिपोर्ट कार्ड बताता है कि रोज़गार गारंटी योजना के तहत मध्यप्रदेश ने 14 करोड़ से ज़्यादा मानव दिवस का रोज़गार उपलब्ध करा कर, देश में पहला स्थान पाया है।

- शासन की वंचितों और कमज़ोरों के प्रति प्रतिबद्धता ने बनाया है प्रदेश को देश में अव्वल-
- रोज़गार सृजन में (1443.28 लाख मानव दिवस का रोज़गार)।
- अनुसूचित जनजातियों को रोज़गार देने में (723.49 लाख मानव दिवस रोज़गार)।
- खर्च की राशि मुहैया कराने में (2591.17 करोड़ रुपये)।
- राशि खर्च में (1737.24 करोड़ रुपये)।
- अनुसूचित जाति, जनजाति, गरीब परिवारों की जमीन पर सिंचाई सुविधा मुहैया कराने में (सबसे ज़्यादा काम पूरे सबसे ज़्यादा काम प्रगति पर, सबसे ज़्यादा राशि खर्च)।
- ग्रामीण अंचल में जल संरक्षण और संवर्धन के बुनियादी कार्यो पर सर्वाधिक राशि व्यय करने वाला राज्य।
- ग्रामीण अंचल में साढ़े तीन लाख से अधिक बुनियादी ज़रूरतों के कार्य स्वीकृत ग्रामीण अंचल में बुनियादी विकास के करीब 1 लाख 40 हजार कार्य पूर्ण।
- 37 लाख ग्रामीण परिवारों को रोज़गार मिला।

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/08

D-66395 दिनांक 07/02/08

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

मेरी डायरी के कुछ पन्ने...

द कारखानिस

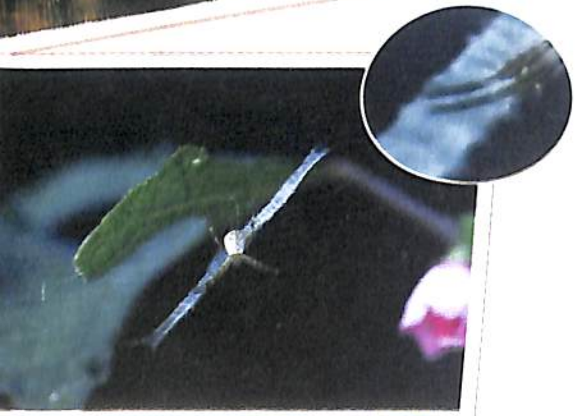

ठण्ड का मौसम है। बड़ी सुबह जब सभी रज़ाई में दुबके हैं, हम निकल पड़ते हैं – येऊर जंगल की ओर। साथ है ताज़ी, ऑक्सीजन भरी ठण्डी हवा। जंगल की सीमा तक पहुँचते-पहुँचते सूरज की पहली किरणें पेड़ों के शिखरों को छूने लगी थीं। पेड़-पत्तियों के बीच से कहीं-कहीं धूप के चन्द टुकड़े जमीं तक पहुँच रहे थे। इनके भरोसे खुद को सेंकने का खेल हम अनजाने में ही शुरू कर चुके थे। सब कुछ सुन्दर और शान्त लग रहा था। क्या हम जल्दी आ गए हैं?

जल्दी कहाँ? जंगल तो कब का जाग गया था। कितने ही पंछी सुबह का आलाप छेड़ चुके थे। मैं उस सुन्दर संगीत-सभा में बुलबुल, शूबीगी (आयोरा) जैसे कुछ ही गायकों को पहचान पाया।

आगे बढ़े ही थे कि जायंट वुड स्पाइडर दिखी (1)। सुबह-सुबह जल्दी उठकर अपने घर को झाड़-पोंछकर साफ सुथरा बनाती। क्या विशाल जाल बनाती है वह! कई बार रास्ते के एक तरफ के पेड़ से दूसरी तरफ के पेड़ तक इनका जाल लटका हुआ दिखाई दे जाता है। लगता है रात भर दावत चली है – जाल में ढेर सारी कीड़े, पतंगे अटके होंगे। अब जाल की मरम्मत करना ज़रूरी है। इस मकड़ी की खासियत है कि यह अपने जाल को बहुत साफ रखती है। मेरे दोस्त ने एक छोटी-सी टहनी उसके जाल में फेंकी। जाल के बीच में बैठी मकड़ी कम्पनों को महसूस कर झट से वहाँ आ पहुँची। जब देखा कि धोखा हुआ है तो आसपास का जाला काटकर टहनी को गिरा दिया। फिर जाले की मरम्मत कर दी।

तुम सोच रहे होगे कि मुझे कैसे पता कि वो मादा है नर नहीं। पहचान आसान है। मादा हमेशा नर से बहुत बड़ी होती है। नर मादा से 10-15 गुना छोटा होता है। वो इतना छोटा होता है कि उसे मादा के पास बहुत सम्भलकर जाना पड़ता है। कहीं गलती से वो उसे अपना शिकार ही न समझ बैठे।

उस के बाद हमें एक सिग्नेचर स्पाइडर दिखाई दी। कुछ गड़बड़ लगी। मकड़ी के तो 8 पैर होते हैं, इसके तो सिर्फ चार ही पैर दिख रहे हैं। हैण्डलेंस से थोड़ा बारीकी से देखा (2)।

यह देखो एक और सिग्नेचर स्पाइडर। इसने अपनी चारों लाइनें पूरी कर ली हैं (3)।

आज मकड़ी दिवस है क्या? एक और सिग्नेचर मकड़ी! लेकिन अलग परिवार की (4)।

पत्तों, घास पर सभी जगह ओस दिखाई दे रही है। धूप में ओस हीरे जैसी चमक रही है। कमाल है ना। जिस रोशनी ने उन्हें हीरा बनाया वही रोशनी कुछ देर बाद उनके खत्म होने का कारण भी बनेगी।

यह देखो एक छोटे-से पत्ते पर ओस की बूँदों के साथ बुना जाल (5)।

तुमने ध्यान दिया होगा कि हर मकड़ी का जाल बुनने का अलग तरीका होता है। जायंट और सिग्नेचर मकड़ी गोल-गोल धागों के बीच बाहर की ओर जाते सीधे धागे बनाती हैं। पत्ते पर बना छोटा-सा जाला या घर में दीवार के कोनों पर बना जाला अलग किस्म का होता है।

यह देखो एक और नमूना। जनाब पूरा जाल नहीं एक ही धागा बनाते हैं और उससे मज़े से लटककर इधर-उधर जाते हैं। यह गैस्टोकैन्थस मकड़ी है। गैस्टो यानी पेट और कैन्था शब्द काँटों से सम्बन्धित है। इस हिसाब से गैस्टोकैन्थस का मतलब हुआ वो जिसके पेट पर काँटे हैं। यह एक बहुत छोटी मकड़ी होती है। लेकिन कई मकड़ियाँ तो इससे भी छोटी होती हैं। चलो जंगल की सबसे छोटी मकड़ी को तलाशते हैं। मुझे नहीं मालूम कि यही सबसे छोटी मकड़ी है या नहीं। अपनी तमाम कोशिश कर मैंने यह फोटो खींची है। इसका वास्तविक साइज़ लगभग 2 मिलीमीटर है **(6)**।

सभी मकड़ियाँ पेड़ या घरों में ही जाले नहीं बुनती हैं। कुछ मकड़ियाँ जमीन पर ही अपना जाला बुनती हैं। हमें जगह-जगह पर फनल मकड़ी के जाल दिखाई दिए। सावधानी से जाल के पास जाइए और धीरे से जाल पर दस्तक दीजिए। मकड़ी अपने बिल से बाहर आएगी। यह देखने के लिए कि कोई शिकार आया है या यूँ ही दस्तक हुई **(7)**।

अगर तुमको लगता है कि इतना महीन धागा बुनना सिर्फ मकड़ियों के बूते की बात है तो यह तुम्हारी गलतफहमी है। कीटों की दुनिया में और भी कई खाँ हैं। इनमें सबसे मशहूर है रेशम का कीड़ा। रेशम को मकड़ी नहीं बुनती। उसे बुनता है एक लार्वा। तुम्हें याद होगा तितली या पतंगे के जीवन की चार अवस्थाएँ होती हैं – अण्डा, लार्वा, प्यूपा और पतंगा। लार्वा अपने शरीर से रेशम का धागा निकालकर अपने आसपास एक कोष बनाता है। रेशम के कपड़े खूबसूरत तो लगते हैं लेकिन इन्हें बनाने का तरीका बहुत क्रूर है। सैंकड़ों प्यूपा को उबलकर मरना पड़ता है तब जाकर रेशम मिलता है।

खोजते-खोजते हमें एक अजूबी चीज़ देखने को मिली। एक पत्ते पर कुछ लार्वा जाल बुन रहे थे। पर वो कोष नहीं बना रहे थे। मेरा अनुमान है कि इनके पीछे छुपकर इत्मिनान से पत्ते खाने के लिए यह खास इन्तज़ाम किया गया है **(8)**।

हाँ, एक बात और। सभी मकड़ियाँ जाल नहीं बुनती। कुछ छुपकर बैठ जाती हैं और जैसे ही कोई कीट नज़दीक आता है, झपटकर उसे पकड़ लेती हैं। मैं ब्लोपॅरिस ॲस्पेरिना के खूबसूरत फूल की फोटो ले रहा था। तभी मुझे लगा कि फूल के ऊपरी हिस्से पर कोई पीली चीज़ चिपकी हुई है। गौर से देखा तो एक छोटी-सी मकड़ी दिखी। फूल पर पैर मोड़कर चुपचाप बैठी। जैसे ही कोई कीड़ा शहद के लिए आया कि गड़प... **(9)**।

अब तक दिन काफी हो चुका था। वापस निकलना चाहिए। क्या अनोखी दुनिया है। जितना ढूँढोगे अजूबे पाते जाओगे। फिलहाल यही बस, और फिर कभी।

5

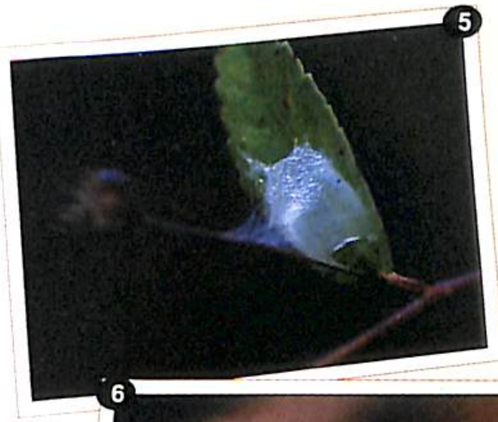

6

7

8

9

फोटो: आमोद कारखानिस

जीयन क्र. 50309/85 के अन्तर्गत भारत सरकार के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08

होली

सफ़दर हाश्मी

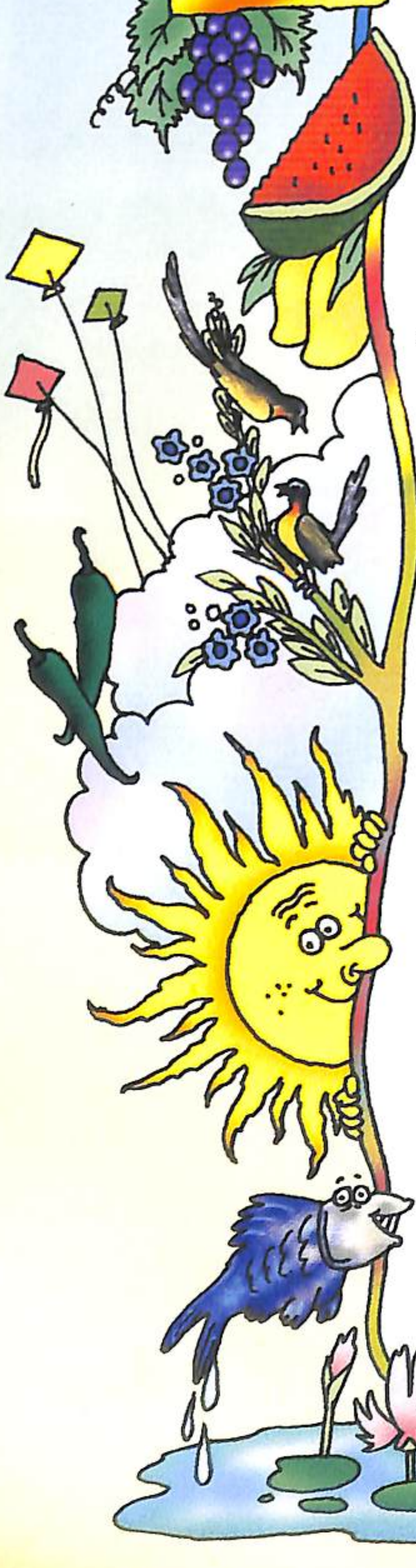

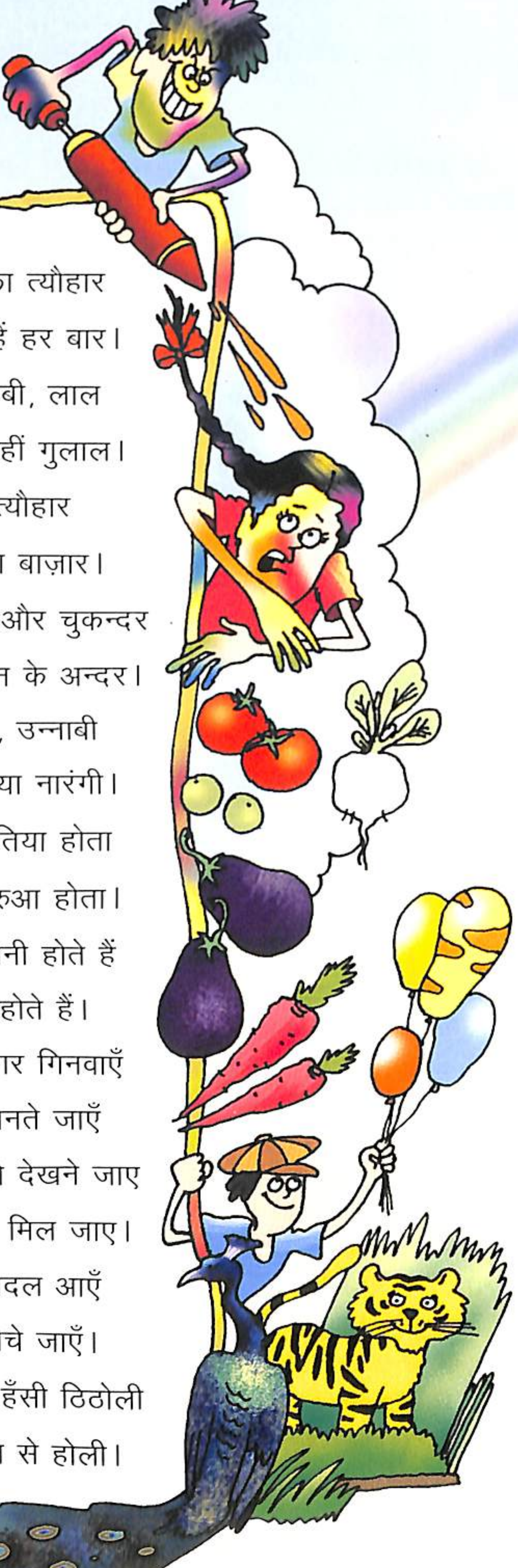

होली को सब क्यों कहते हैं रंगों का त्यौहार
गिनती के छह-सात रंग ही दिखते हैं हर बार।
काले-पीले, हरे, बैंगनी, नीले, गुलाबी, लाल
इन्हें छोड़कर किसी रंग के बिकते नहीं गुलाल।
हम से पूछो तो होली है बेरंगा त्यौहार
उस से ज़्यादा रंगीं होता सब्ज़ी का बाज़ार।
अदरक, लस्सन, नींबू, बैंगन, शलजम और चुकन्दर
प्याज़, टमाटर, गोभी, मैथी, हर दुकान के अन्दर।
कोई सलेटी, कोई बदामी, सिंदूरी, उन्नाबी
कोई दूधिया, कोई सुनहरा, खाकी या नारंगी।
कोई बसन्ती, कोई नींबुई, कोई मोतिया होता
कोई फिरोज़ी, कोई भगवा, कोई गेरुआ होता।
फूल रुपहले और सफेद और अस्मानी होते हैं
ऊदे, भूरे, तरबूज़ी और सरसोंई होते हैं।
चिड़ियों, कीड़ों, जानवरों के रंग अगर गिनवाएँ
जीवन भर बस बैठे-बैठे उनको गिनते जाएँ
आँख खोलकर अगर कोई दुनिया को देखने जाए
होली का भरपूर मज़ा हर रोज़ उसे मिल जाए।
सुबह सवेरे रंगीं कपड़े पहनके बादल आएँ
चिड़ियाँ रंगीं पर फैलाएँ ऊपर-नीचे जाएँ।
फूलों के संग करें तितलियाँ दिनभर हँसी ठिठोली
रोज़ शाम को सूरज खेले आसमान से होली।

स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो प्रकाशक, मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक, एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल-462016, (म.प्र.)